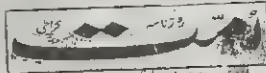


میلاد النبی ﷺ کے موقع پر مبارک باد کو بدعت کہنے والے مفتی نعیم سعودی عرب کے قومی دن پر مبارکباد پیش کر رہے ہیں



بازار ۲۰ شعبان المعظم ۱۴۳۶ھ ۲۳ اکتوبر ۲۰۱۵ء

۱۱۱ شارع الامیر عبدالعزیز بن سعود، الرياض، المملكة العربية السعودية
تلفون: ۳۶۵۵۲۷۰ ۳۶۵۵۲۷۱ فیکس: ۳۶۵۵۲۷۵

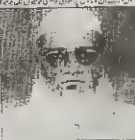


پیغام: مفتی محمد نعیم

محرم مبارک کی آمد سے خوش ہو کر اللہ تعالیٰ سے دعا ہے کہ یہ سب کامیابیوں کا باعث بنے۔
اس موقع پر مبارکباد پیش کرتے ہوئے دعا ہے کہ اللہ تعالیٰ ہمیں اس مبارک موقع پر اپنا فضل و کرم عطا فرمائے۔

پیغام: مولانا غلام رسول

میلاد النبی ﷺ کا موقع مبارک ہے۔ اللہ تعالیٰ سے دعا ہے کہ یہ سب کامیابیوں کا باعث بنے۔
اس موقع پر مبارکباد پیش کرتے ہوئے دعا ہے کہ اللہ تعالیٰ ہمیں اس مبارک موقع پر اپنا فضل و کرم عطا فرمائے۔



اللہ تعالیٰ سے دعا ہے کہ یہ سب کامیابیوں کا باعث بنے۔
اس موقع پر مبارکباد پیش کرتے ہوئے دعا ہے کہ اللہ تعالیٰ ہمیں اس مبارک موقع پر اپنا فضل و کرم عطا فرمائے۔

سعودی عرب کا قومی دن عالم اسلام کو مبارک ہو

السلام للدين والجماعة

قرآنی و اسلامی تعلیمات کے فروغ کیلئے
کئی عشروں سے سرگرم عمل ہے
دنیا بھر میں ہزاروں فارغ التحصیل

درس و تدریس کی خدمات میں مشغول ہیں
مملکت سعودی عرب کے قومی دن کے موقع پر
جامعہ بنوریہ العالمیہ کی انتظامیہ سعودی حکومت
اور عوام کو تازمین حج و عمرہ کی باوقار سیز بانی پر

دلی مبارک

پیش کرتے ہیں

السلام للدين والجماعة متصل ماسٹریس انٹرنیشنل

فون: ۲۵۵۵۵۹۹-۲۵۵۵۵۸۸-۲۵۵۰۳۰۰-۲۵۵۰۳۰۰ فیکس: ۲۵۵۰۳۰۰
E-mail: hikoria@hikoria.org or lahsa@hikoria.org web: www.hikoria.org

سورۃ: ہذا کیا کسی منصف شخصیت کے ہمارے مہتمم اور رفقاء میں سے کسی نے عرب شریف کا قومی دن مبارکباد مبارکباد دی؟
عرب کے قومی دن کو مبارک نہ کہنے میں اور میلاد النبی ﷺ کو نہ کہنے میں بدعت کا نوحی کیوں؟

سورۃ: ہذا کیا کسی منصف شخصیت کے ہمارے مہتمم اور رفقاء میں سے کسی نے عرب شریف کا قومی دن مبارکباد مبارکباد دی؟
عرب کے قومی دن کو مبارک نہ کہنے میں اور میلاد النبی ﷺ کو نہ کہنے میں بدعت کا نوحی کیوں؟

جماعت اسلامی کے بانی مولوی مودودی کی کتابوں پر پابندی کا خیر مقدم

عوام
روزنامہ
کراچی

Daily **Awam** Karachi

کراچی

روزنامه

1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100. 101. 102. 103. 104. 105. 106. 107. 108. 109. 110. 111. 112. 113. 114. 115. 116. 117. 118. 119. 120. 121. 122. 123. 124. 125. 126. 127. 128. 129. 130. 131. 132. 133. 134. 135. 136. 137. 138. 139. 140. 141. 142. 143. 144. 145. 146. 147. 148. 149. 150. 151. 152. 153. 154. 155. 156. 157. 158. 159. 160. 161. 162. 163. 164. 165. 166. 167. 168. 169. 170. 171. 172. 173. 174. 175. 176. 177. 178. 179. 180. 181. 182. 183. 184. 185. 186. 187. 188. 189. 190. 191. 192. 193. 194. 195. 196. 197. 198. 199. 200. 201. 202. 203. 204. 205. 206. 207. 208. 209. 210. 211. 212. 213. 214. 215. 216. 217. 218. 219. 220. 221. 222. 223. 224. 225. 226. 227. 228. 229. 230. 231. 232. 233. 234. 235. 236. 237. 238. 239. 240. 241. 242. 243. 244. 245. 246. 247. 248. 249. 250. 251. 252. 253. 254. 255. 256. 257. 258. 259. 260. 261. 262. 263. 264. 265. 266. 267. 268. 269. 270. 271. 272. 273. 274. 275. 276. 277. 278. 279. 280. 281. 282. 283. 284. 285. 286. 287. 288. 289. 290. 291. 292. 293. 294. 295. 296. 297. 298. 299. 300. 301. 302. 303. 304. 305. 306. 307. 308. 309. 310. 311. 312. 313. 314. 315. 316. 317. 318. 319. 320. 321. 322. 323. 324. 325. 326. 327. 328. 329. 330. 331. 332. 333. 334. 335. 336. 337. 338. 339. 340. 341. 342. 343. 344. 345. 346. 347. 348. 349. 350. 351. 352. 353. 354. 355. 356. 357. 358. 359. 360. 361. 362. 363. 364. 365. 366. 367. 368. 369. 370. 371. 372. 373. 374. 375. 376. 377. 378. 379. 380. 381. 382. 383. 384. 385. 386. 387. 388. 389. 390. 391. 392. 393. 394. 395. 396. 397. 398. 399. 400. 401. 402. 403. 404. 405. 406. 407. 408. 409. 410. 411. 412. 413. 414. 415. 416. 417. 418. 419. 420. 421. 422. 423. 424. 425. 426. 427. 428. 429. 430. 431. 432. 433. 434. 435. 436. 437. 438. 439. 440. 441. 442. 443. 444. 445. 446. 447. 448. 449. 450. 451. 452. 453. 454. 455. 456. 457. 458. 459. 460. 461. 462. 463. 464. 465. 466. 467. 468. 469. 470. 471. 472. 473. 474. 475. 476. 477. 478. 479. 480. 481. 482. 483. 484. 485. 486. 487. 488. 489. 490. 491. 492. 493. 494. 495. 496. 497. 498. 499. 500. 501. 502. 503. 504. 505. 506. 507. 508. 509. 510. 511. 512. 513. 514. 515. 516. 517. 518. 519. 520. 521. 522. 523. 524. 525. 526. 527. 528. 529. 530. 531. 532. 533. 534. 535. 536. 537. 538. 539. 540. 541. 542. 543. 544. 545. 546. 547. 548. 549. 550. 551. 552. 553. 554. 555. 556. 557. 558. 559. 560. 561. 562. 563. 564. 565. 566. 567. 568. 569. 570. 571. 572. 573. 574. 575. 576. 577. 578. 579. 580. 581. 582. 583. 584. 585. 586. 587. 588. 589. 590. 591. 592. 593. 594. 595. 596. 597. 598. 599. 600. 601. 602. 603. 604. 605. 606. 607. 608. 609. 610. 611. 612. 613. 614. 615. 616. 617. 618. 619. 620. 621. 622. 623. 624. 625. 626. 627. 628. 629. 630. 631. 632. 633. 634. 635. 636. 637. 638. 639. 640. 641. 642. 643. 644. 645. 646. 647. 648. 649. 650. 651. 652. 653. 654. 655. 656. 657. 658. 659. 660. 661. 662. 663. 664. 665. 666. 667. 668. 669. 670. 671. 672. 673. 674. 675. 676. 677. 678. 679. 680. 681. 682. 683. 684. 685. 686. 687. 688. 689. 690. 691. 692. 693. 694. 695. 696. 697. 698. 699. 700. 701. 702. 703. 704. 705. 706. 707. 708. 709. 710. 711. 712. 713. 714. 715. 716. 717. 718. 719. 720. 721. 722. 723. 724. 725. 726. 727. 728. 729. 730. 731. 732. 733. 734. 735. 736. 737. 738. 739. 740. 741. 742. 743. 744. 745. 746. 747. 748. 749. 750. 751. 752. 753. 754. 755. 756. 757. 758. 759. 760. 761. 762. 763. 764. 765. 766. 767. 768. 769. 770. 771. 772. 773. 774. 775. 776. 777. 778. 779. 780. 781. 782. 783. 784. 785. 786. 787. 788. 789. 790. 791. 792. 793. 794. 795. 796. 797. 798. 799. 800. 801. 802. 803. 804. 805. 806. 807. 808. 809. 810. 811. 812. 813. 814. 815. 816. 817. 818. 819. 820. 821. 822. 823. 824. 825. 826. 827. 828. 829. 830. 831. 832. 833. 834. 835. 836. 837. 838. 839. 840. 84

دہشت گردی اور
ہمسکرت پٹ پٹندی کو
فروغ دینے کا الزام

بسم الله الرحمن الرحيم

میں نے اپنے دل سے کہا
گو کہ میں ہوں
میں نے کہا

[illegible]

30

دینی و دنیاوی کام کے لئے مسلمانوں کی تائید و حمایت
 کی ضرورت ہے۔ اگر کوئی شخص دین و دنیا کے لئے تائید و حمایت
 نہ کرے گا تو اس کی زندگی بیکار و برباد ہو جائے گی۔
 اگر کوئی شخص دین و دنیا کے لئے تائید و حمایت نہ کرے گا
 تو اس کی زندگی بیکار و برباد ہو جائے گی۔
 اگر کوئی شخص دین و دنیا کے لئے تائید و حمایت نہ کرے گا
 تو اس کی زندگی بیکار و برباد ہو جائے گی۔


مولوی بہودوی کی کتابوں میں حضور ﷺ، انبیاء کرام، صحابہ کرام اور ازواج مطہرات کی شان میں گستاخیاں

گستاخی: نبی ہونے سے پہلے حضرت مہدی علیہ السلام سے بھی بڑا گناہ ہو گیا تھا کہ انہوں نے ایک انسان کو بکلی کر دیا (بحوالہ رسائل و مسائل صفحہ نمبر 31)
گستاخی: حضور ﷺ کے متعلق مودودی لکھا ہے کہ عمر کے عرصے کا یہ اپنا پرہیزگار بنے لیکن دورِ جدید کا بانی اور قیام دینا، کالیئر رہے (بحوالہ تحفہات صفحہ نمبر 201)
گستاخی: قرآن مجید نجات کے لئے نہیں بلکہ ہدایت کے لئے کافی ہے (بحوالہ تحفہات صفحہ نمبر 321)
گستاخی: تجسّس سالہ زانیانِ انبوت میں حضور ﷺ سے اپنے فخر ان میں خامیاں اور کوتاہیاں سرزد ہوئیں (قرآن کی چار بنیادی اصطلاحیں)
گستاخی: جہنم علیہ السلام پہنچے ہیں جن میں کذاب و خدا نے اہل قانون کو بجا (بحوالہ بکھر طبع کا معنی صفحہ نمبر 9)
گستاخی: کہ جس میں حضور ﷺ کی آنکھوں کے سامنے ہوتے ہوئے عسکرات (جراثیم) کا ارتکاب ہوتا تھا مگر آپ ﷺ ان کو ممانعت کی طاقت نہیں رکھتے تھے
لئے ناموش رہتے تھے (ترجمان القرآن صفحہ نمبر 10)

سنائی: زوج مطہرات اور بی بی بیٹے کے درمیان ناجائز ہوئی تھی۔
سنائی: ازواج مطہرات کے لئے مسلسل عسرت (عققدی) کی زندگی بسر کرنا دشوار ہو گیا تھا اور وہ بے مہر ہو کر حضور ﷺ سے نفرت کا مطالبہ کرنے لگیں۔
سنائی: ازواج مطہرات حضور ﷺ کو تنگ کرنے سے باز نہیں آتی تھیں۔

سنائی: ازواج مطہرات کی ان باتوں سے حضور ﷺ کی خواندگی زندگی بھر ہو گئی تھی۔
یہ چند گستاخیاں میں نے مولوی مودودی کی کتابوں سے نقل کی ہیں حالانکہ گستاخیاں اس قدر ہیں کہ پوری کتاب لکھی جاسکتی ہے۔ مودودی اسلام دشمنی میں اس
"کے" کس چکے سے کراہی کے ہم مسلک اور ہم مشرب علماء و پوئلک کو بھی "قتل و دود" کے نام سے کتاب تحریر کرنی پڑی جو کہ مختلف کتبوں پر دستیاب ہے۔
مطالبہ: ہم بلکہ انہیں جس مودودی کی کتابوں پر پابندی کی مکمل حمایت کرتے ہیں بلکہ عالم اسلام سے یہ مطالبہ کرتے ہیں کہ وہ تمام اسلامی ممالک میں مولوی
کی کتابوں پر پابندی لگا کر شائع کرنے والے کتب خانوں کو سنبھال لیا جائے۔

ہمارا سوال: کیا تقریب شہداء بخاری اور پھر اجتماعی دعا کبھی دو در رسالت یا دور صحابہ و تابعین میں ہوئی؟



بائو حویس سالانہ

تقریب ختم صحیح بخاری و اجتماعی دوکا

شاخ الحدیث حضرت مولانا نور الہدیٰ صاحب مدظلہ

مدرسہ اسلامیہ

الجامعة الربانیہ

تعمیم براد و تہذیب و اخلاق کراچی

فون 0321-2079245 0333-2296651

اتوار ۱۳
۱۳۳۱ھ
227
2010
بعد نماز ظہر

کے گردی
تہذیب و
تہذیب و

کے گردی

تہذیب و

تہذیب و

تہذیب و

تہذیب و

تہذیب و

تہذیب و

تہذیب و

تہذیب و

تہذیب و

تہذیب و

تہذیب و

تہذیب و

تہذیب و

تہذیب و

تہذیب و

تہذیب و

تہذیب و

تہذیب و

تہذیب و

تہذیب و

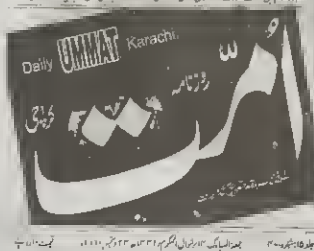
تہذیب و

تہذیب و

تہذیب و

ڈاکٹر عافیہ کے خواب میں حضور ﷺ کا مصیبت کے وقت آنا اور حوصلہ افزائی فرمانا

قرآن مجید پر امت پر بھیجے ہوئے ان لوگوں کی اصطلاح کے لئے میں ان کی بات لیتا ہوں (قرآن ۲۱)



جلد ۱۵، شمارہ ۴، پیر ۲۴ ستمبر ۲۰۱۰ء، ۱۱ ستمبر ۱۴۳۱ھ، ۲۳ ذی الحجہ ۱۴۳۱ھ، قیمت ۱۰ روپے

بائیس سال کا توں 2003ء میں امریکی حراست میں ہونے کا موقف سترہ ماہ پہلے ختم ہو گیا تھا۔ اب اہل ایس کرٹوں کی خلاف ورزی

امریکی عدالت نے عافیہ کو 86 برس قید سنائی

ایسٹون نے امریکی عدالت کی حکم نامہ کے مطابق 121 برس کی عمر کی عافیہ کو 86 برس قید سنائی۔ امریکی عدالت نے عافیہ کو 86 برس قید سنائی۔ امریکی عدالت نے عافیہ کو 86 برس قید سنائی۔

ایسٹون نے امریکی عدالت کی حکم نامہ کے مطابق 121 برس کی عمر کی عافیہ کو 86 برس قید سنائی۔ امریکی عدالت نے عافیہ کو 86 برس قید سنائی۔ امریکی عدالت نے عافیہ کو 86 برس قید سنائی۔

ایسٹون نے امریکی عدالت کی حکم نامہ کے مطابق 121 برس کی عمر کی عافیہ کو 86 برس قید سنائی۔ امریکی عدالت نے عافیہ کو 86 برس قید سنائی۔ امریکی عدالت نے عافیہ کو 86 برس قید سنائی۔

ایسٹون نے امریکی عدالت کی حکم نامہ کے مطابق 121 برس کی عمر کی عافیہ کو 86 برس قید سنائی۔

میلاد مصطفیٰ ﷺ کو بدعت قرار دینے والی جماعت اسلامی ”شان مصطفیٰ کانفرنس“ کا انعقاد کر رہی ہے

تقاریر کر رہا ہے اب وطن کا ہر گلی کوچہ
یہاں جاری کسی صورت نظام مصطفیٰ ﷺ کر دو

ایک ہریانہ کے محنت سے اپنے ایمان کو جلائے
اور آپ ﷺ کی تعلیمات پر عمل پیرا ہو جائیں
جماعت اسلامی نے ایک عظیم الشان

منعقد کی ہے

شان مصطفیٰ ﷺ کانفرنس

امید ہے تمام عاشقانِ رسول ﷺ کانفرنس میں بھرپور شرکت کر کے حقیقی غلامانِ مطلق اللہ بننے کا ثبوت دینگے۔

جناب محمد حسین بھٹی صاحب
امیر جماعت اسلامی کراچی

جناب حافظ عبدالواحد شیخ صاحب
نائب امیر جماعت اسلامی کراچی ہونہی

28 مارچ 2009
بروز ہفتہ، 9:30 بجے شب

بمقام بولی کولڈ، رنگ، کھارادر

جماعت اسلامی کھارادر، کامل گلی UC-3، کراچی

Res : 0300-2650012

www.shanmawake.com

ہمارا سوال

میلاد مصطفیٰ ﷺ کانفرنس کو بدعت قرار دینے والی جماعت اسلامی اپنی منعقدہ شان مصطفیٰ کانفرنس کا ثبوت فراہم کرنے؟ دین بدعت کا توفیق ہی پر لوگے کا

امریکہ نے ہی ”وہابی“ فرقے کو پاکستان تک پہنچایا اور اب یہی لوگ فساد پھیلا رہے ہیں، ہیلیری کلنٹن

کو پاکستان تک پہنچایا اور اب یہی لوگ پاکستان کے شہر سوات اور دیگر شہروں میں فساد اور انتہا پسندی پھیلا رہے ہیں

امریکی وزیر خارجہ کے اس بیان پر غلغلہ اٹھ جائے تو پاکستان میں دوسرے مہمیت کے مرتبہ میں آتے ہیں۔ ایک دیوبندی فرقہ اور دوسرا دیوبندی فرقے سے ترقی کرتے کرتے غیر متعلقہ اہل تشیع میں گیا۔ ہم صحیح مکتوبہ والے ہیں اس بات کو اپنے نبوت تک پہنچاتے ہیں اور جانے ہیں کہ ان دونوں فرقوں کے کارکنین کا انگریزوں سے رشتہ کیا ہے۔ اب وہ ایک سے انگریزوں، دونوں فرقوں نے مہربان ہیں لہذا اگر یہ کاروبار اور کاروبار کا بندھن کی شکل میں اس کے لیے اصل مکتوبہ مکتوبہ۔

اکابرین دیوبند کا انگریزوں سے رشتہ

جنوری ۱۹۷۱ء کا یہ مہلوی رشید احمد گنگوہی صاحب فرماتے ہیں کہ رشید مکار (انگریز) کا فرامین وار ہوں تو جوئے لٹرام سے میرا ال تھی یہ کہ نہیں ہو گا اور مارا گیا تو مکار (انگریز) کا لگ ہے اسے اختیار ہے جو چاہے کرے (اگر کتاب: تذکرہ رشید صفحہ نمبر ۸۰) مطلوبہ ادارہ اسلامیات انارکلی لاہور پاکستان)

☆ مولوی اشرف علی تھانوی صاحب کھرکار برطانیہ (انگریز) سے جیسے سو روپے ماہوار ملا کرتے تھے (مکملہ المصروفین صفحہ نمبر 9) دارالاشاعت دیوبند خلیفہ سہا پور

”تتلیف: جامعہ کے بانی مولوی الیاس کاندھلوی کو سرکار برطانیہ (انگریز) سے بذریعہ لٹر چھپے گئے تھے (از کتاب: حکماء الصدوقین صفحہ نمبر 8) اور الاشاعت: بذریعہ شمس سہارنپور“

☆ جمعیت علمائے اسلام کو حکومت برطانیہ (انگریز) نے قائم کیا اور ان کی امداد کی (مذاکرۃ الصدرین صفحہ نمبر 7) دارالاشاعت دیوبند ضلع چھانپور

☆ مولوی اسماعیل دہلوی صاحب فرماتے ہیں کہ گورنمنٹ برطانیہ (انگریزوں) سے جہاد کرنا کسی بھی صورت میں جائز نہیں (حیات طیبہ صفحہ نمبر 23، 24)۔
 قارئین کرام! میں تمام باتوں کو پڑھ کر گمانہذاؤں کا نہیں کیا کہ اردو بھنگا نیز دیوں کے لیے قدر فرمائیں اور دے۔

اکابرین غیر مقلدین الہادیث کا انگریزوں سے رشتہ

☆ پاک ہندس فقہ اہل حدیث کی ایک سیاسی تاریخ ہے۔ جو نہایت ہی تجلج ہزار اور حیران کن ہے۔ یہ تقریریں اس فرقے کو پہلے پہل کہتے تھے جو اصل میں غیر مسلمہ ہیں پر کفر سمجھیں۔ یہ انتخاب 1857ء سے پہلے انگریزوں کا حمایتی اور بدعقیدہ غیر مسلم برطانوی اقتدار قائم کرنے کا اہم ترین جہانے میں انگریزوں کی مدد تھی۔ انگریزوں نے اقتدار حاصل کرنے کے بعد تو اہل سنت پر ظلم و ستم ڈھا۔ لیکن ان حضرات کا مقصد دین کی حفاظت نہ تھی۔

مرسید احمد خان (م۔ 1315ھ/1868ء) کے بیان سے جس کی تائید ہوتی ہے۔

انگلش گورنمنٹ ہندوستان میں اس فرتے کیلئے جو دہائی گویا ایک رحمت ہے جو مسلمانوں کو دہائی کی بنا پر ان میں بھی رہا نہیں گیا کہ ان کو آؤ تو خیر بلکہ ان کو شہر سے بلکہ ان کو ملک سے۔ سلطان کی عہد داری میں وہاں کا رہنا مشکل ہے اور مسلمانوں کو تو اگر کوئی جھوٹ بھی دیاں کہہ دے تو اسی وقت جیل خانے کی حوالت میں بھیجا جاتا ہے۔ پس وہاں جس آؤ تو خیر نہ ہے۔ انگلش گورنمنٹ کے سایہ کی طاقت میں رہتے ہیں دوسری جگہ ان کو پھینک دیتا ہے۔ ہندوستان ان کے لئے دارالمان ہے۔ (مقالات سرمد احمد خان صفحہ نمبر

(202

یہ اس شخص کے تاثرات ہیں جو ہندوستانی سیاست بلکہ عالمی سیاست پر گہرین نظر رکھتا تھا۔

[illegible]

خود اہل حدیث عالم باطن محمد حسین بن ابی بکر (جنہوں نے انگریزوں کی اقتدار سے بعد میں غیر متکلموں کی وکالت کی) کی اس تحریر سے سرسید احمد خان کے بیان کی تصدیق۔

جوتی ہے وہ کہتا ہے۔۔۔

اس کردہ اہل حدیث کے غیر خواہ دارانی رعایات پیش گوشت ہونے پر ایک بڑی اور روشن دلیل یہ ہے کہ یہ لوگ برائش گوشت کے زیر حمایت رہنے کو اسلامی مسلمانوں کے باقی رہنے سے بھترکتے ہیں (مقالات سرسید احمد خان صلیب نمبر 203)

آخرا کیا بتی ہے کہ اسلام کے دعوے اراکیت فرنے کو خود مسلمانوں کی سلطنت میں وہ اسے نہیں مل رہا ہے جو اسلام کے دشمنوں کی سلطنت میں مل رہا ہے۔ ہر ذی عقل اس کی حقیقت بخش سکے گا۔ اس کے لئے تفصیل کی ضرورت نہیں۔۔۔

مگر دیکھو کہ یہ چشم جوبلی پر مولوی محمد حسین ملاوٹی نے جو سنا سناہیں کیا اس میں بھی یہ اعتراف موجود ہے۔۔۔ آپ نے فرمایا:

اس کردہ کو اس سلطنت کے قیام و استحکام سے زیادہ مسرت ہے اور ان کے دل سے مبارکباد کی صدائیں زیادہ زور سے ساتھ نعرہ زن ہیں (مقالات سرسید احمد خان صلیب نمبر 204)

میکل آدی ایک اور جگہ تحریر کرتا ہے۔۔۔

جو اہل حدیث کہلاتے ہیں، وہ ہمیشہ سے سرکارِ انگریز کے شک حلال اور غیر خواہ رہے ہیں اور یہ بات بار بار ثابت ہو چکی ہے اور سرکاری خط و کتابت میں تسلیم کی جا چکی ہے (مقالات سرسید احمد خان صلیب نمبر 205)

یہودیوں کی مسلمانوں کے جذبہ جہاد سے ہمیشہ ڈر لگتا رہتا ہے۔۔۔ 1857ء کے فورا بعد انگریزوں کے مذاکرات میں اس جذبہ کو سر کرنے کی ضرورت تھی چنانچہ مولوی محمد حسین ملاوٹی نے جہاد کی خلاف 1292ء/ 1876ء میں ایک رسالہ "الاقتصادی مسائل الجہاد" تحریر فرمایا جس پر جہاد مسعود عالم بزرگ حکومت برطانیہ نے مصنف کے انعام سے نوازا۔۔۔ (مقالات سرسید احمد خان صلیب نمبر 206)

آپ نے بار بار لفظ "اہل حدیث" سنا جس کا پہلے کو یہ کیا چاہا ہے کہ اس لئے کہ پہلے "دہلی" کہتے تھے۔ انگریزوں کی امانت اور مذاکرات میں سلف صالحین سے اختلاف کی بنا پر برصغیر کے لوگ جبکہ آزادی 1857ء کے بعد ان سے نفرت کرنے لگے اس لئے دہلی نام بدلوا کر "اہل حدیث" نام رکھنے کی درخواست کی گئی۔۔۔ یہ اقتباس ملاحظہ فرمائیں۔۔۔

مناہر میں اس فرارنے کے لوگ اپنے حق میں اس لفظ (دہلی) کے استعمال پر سخت اعتراض کرتے ہیں اور کمال ادب و انکساری کے ساتھ گوشت کے درخواست کرتے ہیں وہ سرکاری طور پر اس لفظ دہلی کو منسوخ کر کے اس لفظ کا استعمال سے ممانعت کا حکم نافذ کرے اور ان کو "اہل حدیث" کے نام سے مخاطب کیا جائے (مقالات سرسید احمد خان صلیب نمبر 207)

حکومت برطانیہ کے نام مولوی محمد حسین ملاوٹی کی انگریزی درخواست کا اردو ترجمہ جس میں حکومت برطانیہ سے "دہلی" کی جگہ "اہل حدیث" نام منظور کرنے کی درخواست کی گئی ہے۔

ترجمہ درخواست برائے الا غشت نام اہل حدیث و منسوخ لفظ دہلی

اشاعت السید انس لاہور

از جانب ابو سعید محمد حسین لاہوری ایڈیٹر اشاعت دیکل اہل حدیث ہند

بخدمت جناب بیکر برنی گوشت

میں آپ کی خدمت میں بطور پیش پیش کرنے کی اجازت اور معافی کا درخواست گزار ہوں۔ 1886ء میں میں نے ایک مضمون اپنے باہوری رسالہ اشعار و نثر میں شائع کیا تھا جس میں اس بات کا اظہار کیا تھا کہ لفظ دہلی جس کو ہوسا بائی دھک حرام کے معنی میں استعمال کیا جاتا ہے استعمال مسلمان ہندوستان کے اس کردہ کے حق میں حلال حدیث کہلاتے ہیں اور وہ ہمیشہ سے سرکارِ انگریز کے شک حلال اور غیر خواہ رہے ہیں اور یہ بات (سرکاری دفاواری دھک حلال) بار بار ثابت ہو چکی ہے اور سرکاری خط و کتابت میں تسلیم کی جا چکی ہے مناسب نہیں (خط کشیدہ جلد خاص طور پر قابل غور ہے)

مناہر میں اس فرارنے کے لوگ اپنے حق میں اس لفظ کے استعمال پر سخت اعتراض کرتے ہیں اور کمال ادب و انکساری کے ساتھ گوشت کے درخواست کرتے ہیں کہ وہ (جہاد) و جہاد میں غامی اور جنگ حلال سے پیش نظر، سرکاری طور پر اس لفظ دہلی کو منسوخ کر کے اس لفظ کے استعمال سے ممانعت کا حکم نافذ کرے اور ان کو اہل حدیث کے نام سے مخاطب کیا جائے۔۔۔ اس مضمون کی ایک کاپی بذریعہ عرضداشت میں (محمد حسین ملاوٹی) کے دلخواہ گوشت دہلی ارسال فی سبب تاکہ اس مضمون کی طرف توجہ دے اور

گورنمنٹ ہند کو بھی اس پر متوجہ فرما دے اور فرقہ کے حق میں استعمال لفظ وہابی سرکاری خط و کتابت میں موقوف کیا جاوے اور اعلیٰ عدیت کے نام سے مخاطب کیا جاوے۔ اس درخواست کی تائید کے لئے اور اس امر کی تصدیق کے لئے کہ یہ درخواست کل ممبران اعلیٰ عدیت و ہندوستان کی طرف سے ہے (مخاطب و ہندوستان کے تمام غیر مقلد علماء یہ درخواست پیش کرنے میں برابر کے شریک ہیں) اور ایڈیٹر اشاعت اللہ ان سب کی طرف سے مکمل ہے۔ میں (محمد حسین ثنائی) نے چند قطعات شہرہ گورنمنٹ و مخاطب میں پیش کئے جن پر فرقہ احمدیہ تمام موبہ جات ہندوستان کے دخل و شہیت ہیں اور ان میں اس درخواست کی بڑے زور سے تائید پائی جاتی ہے۔ چنانچہ آخر عمل سرکار اس ایجنسی صاحب بہادر (داس) وقت و مخاطب کے لکچرٹیف گورنمنٹ کے لئے گورنمنٹ ہند کو اس درخواست کی طرف توجہ دل کر اس درخواست کو اجازت گورنمنٹ ہند مقرر فرمایا اور استعمال لفظ وہابی کی مخالفت اور اجراء نام "اعلیٰ عدیت" کا حکم و مخاطب میں نافذ فرمایا جائے۔

میں ہوں آپ کا کھاتہ ہی فرما سوار خام
الوسیہ محمد حسین، ایڈیٹر اشاعت اللہ
(اشاعت اللہ نمبر 24، 26 تا 28، 11 جلد)

یہ درخواست گورنمنٹ ہند و مخاطب سرچارلس ایجنسی ان کو دی گئی اور انہوں نے تائیدی نوٹ کے ساتھ گورنمنٹ آف انڈیا کو بھیجی اور وہاں سے سکریٹری آف انڈیا 1888ء میں حکومت ہند اس حکومت بنگال حکومت بنالی حکومت کی بنالی حکومت بمبئی وغیرہ سے مولوی محمد حسین کی اس اطلاع دی۔
سر سید احمد خان نے بھی اس کا ذکر کیا ہے وہ لکھتے ہیں:

جناب مولوی محمد حسین نے گورنمنٹ سے درخواست کی تھی کہ اس فرقے کو جو درحقیقت اعلیٰ عدیت ہے گورنمنٹ اس کو "وہابی" کے نام سے مخاطب نہ کرے مولوی محمد حسین کی کوشش سے گورنمنٹ نے منظور کر لیا ہے کہ گورنمنٹ کی تحریرات میں اس فرقے کو "وہابی" کے نام سے فقیر نہ دیا جائے بلکہ "اعلیٰ عدیت" کے نام سے موسوم کیا جاوے (مقتالات سر سید احمد خان صفحہ 208)

☆ غیر مقلد احمدیہ اکابر مولوی میاں نذیر حسین (دہلی) زمانہ 1857ء میں جبکہ دہلی کے بعض مقتدا اور دیگر مولویوں نے انگریزوں سے جہاد کا فتویٰ دیا تو میاں صاحب نے اس پر مدخلہ کے ذریعہ... اور خود فرماتے تھے کہ میاں وہاں تھا بہادر شاہی وقتاً... وہ بے چارہ یوں ہمارا ہمارا شہر بنا کر... بہادر شاہ کو بہت گھمایا کہ انگریزوں سے لڑنا مناسب نہیں ہے مگر وہ انہوں کے ہاتھ میں کچھ اور ہے پھر کرتے تو کیا کرتے (امیات بعد الحما ت صفحہ 125)

☆ غیر مقلد احمدیہ اکابر مولوی میاں نذیر حسین کوشی اعلیٰ عدیت کا خطاب گورنمنٹ انگلیہ کی طرف سے 22 جون 1891ء بمطابق 21 محرم الحرام 1315ھ بروز جمعہ شب کو ملا (امیات بعد الحما ت صفحہ 180)

☆ غیر مقلد اعلیٰ عدیت اکابر مولوی نواب صدیق حسن خان جو بالی خود اقرار کرتے ہوئے لکھتے ہیں کہ میں تیس سال کا ہوں اس وقت سے متحمل وطن اس ریاست جو بالی کا ہوں اور ہمیشہ معزز و محترم رہا۔ دیکھئے صفحہ (جو بالی) نے دو بخت سے مجھے عزت و افتخار بخشا اور امر باطلار گورنمنٹ خالدہ صاحبہ مرض سرکار انگریز ظہور آیا اور چونکہ ہزار روپیہ سالانہ اور خطاب "مستتر الہامی" سے سرفرازی ہوئی۔ حکام عالی منزلت بمبئی کا یہ بازاران دولت انگلیہ کو تبرجہ اس ریاست کی فخر خانی اور وفاداری عموماً اور اس سے مصلحت دولت (صدیق حسن خان جو بالی) کا خصوصاً ہو چکا ہے (تربحان وہابیہ صفحہ 17، 19، 27، 29)

☆ امام الوہابیہ شاد اللہ سترسی نے لکھتے کہ جلسے میں آپ نے اللہ کا شکر ادا کرنے کے بعد انگریز حکومت اور انگریز حکام کا شکریہ ادا کیا اور پھر ایمان جلسہ کا پھر دعا مانگی (از کتاب رہنما و ہدایہ لکچرٹیف گورنمنٹ 20)

☆ غیر مقلد احمدیہ اکابر مولوی محمد حسین ثنائی انگریز حکومت سے تعاون کے حق میں تھے اور بظاہر انگریز حکومت کے شاخوں میں تھے (از کتاب تحریک آزادی غیر مقلد نمبر 107)

مترم قادر تین کرام! آپ نے تمام مبتدعوں کو لے لیا کہ جس سے واضح ہو گیا کہ وہ بدیوں اور باہنیوں کا انگریزوں سے بہت پرانہ رشتہ ہے لیکن وہ لوگ ہیں جنہوں نے انگریزوں سے مال اور اسلحہ کی صورت میں دے کر اسلام اور اسلامی قوانین کو نقصان پہنچایا اور مزید پہنچا ہے ہیں۔
اگر تملی کشتن کا بیان غلط ہے تو پھر اس کے بیان کے بعد دیکھئے وہابیت کے کسی وہابی دیوبندی مولوی نے اس بیان کے خلاف ایک شہن کیوں نہیں لیا؟
21 مئی کے لئے کہ اب تک کسی اخبار میں امریکی دوزخ و دھوکہ کشتن کے بیان کی باہنیوں نے خدمت کیوں نہیں کی؟

ہم دنیا سے وہابیت کی پر اسرار خاموشی کو کیسا سمجھیں؟

انگریز کا ایجنٹ یا ان کا آلہ کار؟؟؟

بہم عقیدگی کا وبال

Z: www.islam.yolaeite.com/new.php

اس خواب کو بیان کر کے مفتی تقی عثمانی صاحب نے مسلک حق الہدی سے چاہقانہ کو تسلیم کر لئے۔

- جس عقیدے کو تھی عثمانی نے تسلیم کر لیا اس کے متعلق اکابر دیوبند کا فتویٰ

دیوبندی کار کا یہ معنی مولانا شہدائے کرام کو گستاخ کرنے کی کتاب قادیانی شہید پر دوسری جلد ستمبر 10ء پر لکھا ہے جو مجلس اللہ عثمانی کے سوا کسی غیر کے لئے لکھی گئی ہے۔ یہ کتاب کے دو کافر ہے۔
دوسری قادیانی شہید کے ستمبر نمبر 96ء پر لکھا ہے کہ جو مجلس کے یہ عقیدہ اور کلمے مجلس لکھے اور علم کا وہ مرکز ہے۔

اکابر دیوبند کے فتوے کے مطابق مفتی محمد تقی عثمانی کون؟ کافر یا مشرک؟ فیصلہ آپ کریں

۱۱ اکتوبر 2005ء میں خیریتونخوا کی سرزمین پر پاکستان کی تاریخ کا غیر تین جزوہ آباد جس تاریخ خیریتونخوا کے مشہور جہت گرام اور پانڈا کوٹ اور دو گرام خیریتونخوا میں سے ایک لاکھ سے زائد افراد ہلاک اور پانچ لاکھ افراد زخمی ہوئے۔ 12 مئی 2007ء کے ایک ایک شہر کا تین خیریتونخوا کے قتل کیے والے کیوں کر بے دردی سے کیا گیا۔ ۱۰ دسمبر 2008ء سے لے کر سوات اور پختون خیریتونخوا کے خلاف خیریتونخوا لاکھ افراد زخمی اور دو گرام خیریتونخوا میں شہر اور افراد کو قتل کیا ان کے مکانوں پر قبضہ کیا اور دو گرام خیریتونخوا کو قتل کیا۔ ۱۱ مئی 2009ء کے پہلے میں خیریتونخوا کے خلاف خیریتونخوا میں قتل کیا گیا جس میں ایک لاکھ سے زائد افراد مارے جانے لگے۔ خیریتونخوا کے دو گرام خیریتونخوا میں جان لوٹے ہوئے افراد و خیریتونخوا میں شامل ہیں۔ ہزاروں مکانات جس جس ہوئے ہیں۔ خیریتونخوا کے قتل کیا گیا۔

یہاں دین عزیز میں ان تین اہل علم کے ہوتے تو خلیفہ اہل کاسطہ بہت زور دیتے جہاں سے یہاں سے ملک میں یہ کادوئی تکمیل لگتا ہے کہ ہر ملک میں سب سے زیادہ خوش حال ملے۔
 ہر جہاں کے غیر مختلطوں میں جو سیرت ہے۔ یہ بات دیکھا کہ وہ پڑ ہے۔ غیر مختلطوں میں ہر جہاں کے ہر مشہور و مشاہیر پر جو سیرت ہے جن میں ملک جو سیرت والے چہرہوں افراد کی تعداد جو مشہور ہیں کی
 ہے جن کا کسی گریب ہو یا کسی جماعت سے کوئی تعلق نہیں ہے اور یہ سلسلہ ایک تک جاتی ہے۔

یہ تمام باتیں سمجھنے کا مستند مکتبہ جی ہے کہ کبھی ہم لوگوں نے تو کیا کہ غیر بخیر خواہوں نے یہاں کیا کیا؟ ہماری ناقص سوچ اس کا نتیجہ رہی ہے کہ سب یہ عقیدہ کیا کرنا ہے۔ مسلمان کی کھال کی جھلس اس کا اسلامی عقیدہ ہے عقودہ بنیاد ہے۔ حیدر خراب تر تھا، اصل نقصان نہیں ہیں۔ بات اصل حقیق ہے کہ بد عملی کا وبال کیا باعث بنی ہے کہ ہم نے بات نہیں سمجھ کر کھال کی خرابی سے بد کفرانی حکام کی خرابی کے عقیدہ کو بنیاد ہے۔ بنیاد ناقص ہو تو عمارت بھی ناقص ہوتی ہے لہذا یہ عقیدہ کہ غیر بخیر خواہوں نے مسلمانوں کو اپنے عروج پر لے کر غیر بخیر خواہوں سے توجہ نہ کر کے برسرِ راست تاجِ شہادت پہنچا دیا۔ پاک کے جیوسوں پر پابندیاں لگا دی گئیں۔ جیوسوں پر پابندیاں لگانے والے ان کے نفس پر دوسرا حملہ کرنے کی ممانعت طلب ہے اور یہ سب کچھ کائنات کا حادِ اُرداء ہے اور یہ سب کچھ بدعتی حادِ اُرداء پر راجع رہی ہے۔ دینِ اولیٰ پر عقیدہ رکھ کر بدعتیہ دین پر رشتے۔

غیر مختصر خواب پیدیاں اسی وجہ سے ہو سکتا ہے۔ اگر آپ بھی نعصب کی عینک اتار کر سو چکے ہو۔

دیوبندی دارالعلوم کا فتویٰ: جو کام دور رسالت، دور صحابہ میں نہیں کئے گئے، وہ بدعت ہیں

الجمهورية الجزائرية الديمقراطية الشعبية

الجمهورية الجزائرية الديمقراطية الشعبية

الجمهورية الجزائرية الديمقراطية الشعبية

الجمهورية الجزائرية الديمقراطية الشعبية

الجمهورية الجزائرية الديمقراطية الشعبية

الجمهورية الجزائرية الديمقراطية الشعبية

الجمهورية الجزائرية الديمقراطية الشعبية

الجمهورية الجزائرية الديمقراطية الشعبية

الجمهورية الجزائرية الديمقراطية الشعبية

الجمهورية الجزائرية الديمقراطية الشعبية

الجمهورية الجزائرية الديمقراطية الشعبية

الجمهورية الجزائرية الديمقراطية الشعبية

الجمهورية الجزائرية الديمقراطية الشعبية

الجمهورية الجزائرية الديمقراطية الشعبية

الجمهورية الجزائرية الديمقراطية الشعبية

الجمهورية الجزائرية الديمقراطية الشعبية

الجمهورية الجزائرية الديمقراطية الشعبية

الجمهورية الجزائرية الديمقراطية الشعبية

الجمهورية الجزائرية الديمقراطية الشعبية

الجمهورية الجزائرية الديمقراطية الشعبية

الجمهورية الجزائرية الديمقراطية الشعبية

الجمهورية الجزائرية الديمقراطية الشعبية

الجمهورية الجزائرية الديمقراطية الشعبية

الجمهورية الجزائرية الديمقراطية الشعبية

الجمهورية الجزائرية الديمقراطية الشعبية

الجمهورية الجزائرية الديمقراطية الشعبية

الجمهورية الجزائرية الديمقراطية الشعبية

الجمهورية الجزائرية الديمقراطية الشعبية

الجمهورية الجزائرية الديمقراطية الشعبية

الجمهورية الجزائرية الديمقراطية الشعبية

الجمهورية الجزائرية الديمقراطية الشعبية

الجمهورية الجزائرية الديمقراطية الشعبية

الجمهورية الجزائرية الديمقراطية الشعبية

الجمهورية الجزائرية الديمقراطية الشعبية

الجمهورية الجزائرية الديمقراطية الشعبية

الجمهورية الجزائرية الديمقراطية الشعبية

الجمهورية الجزائرية الديمقراطية الشعبية

الجمهورية الجزائرية الديمقراطية الشعبية

الجمهورية الجزائرية الديمقراطية الشعبية

الجمهورية الجزائرية الديمقراطية الشعبية

الجمهورية الجزائرية الديمقراطية الشعبية

الجمهورية الجزائرية الديمقراطية الشعبية

Serial No :- 4072

Fatwa No :- 37472

Date :- 22/2/2008

Email :-

Question :-

Assolaamu alaikum, Yeh bareluwi lag jo moiledun nobi ka Eid monote hai aur Nabi lagote hai aur julos waghera karte hai, is ka kya hukm hai? Kya yeh biddat hai? yeh oop ka paldish ka soth mazeeq hai? Baroe maharban! jawab inayat aeto inrme.....Husain

السلام علیکم ورحمۃ اللہ وبرکاتہ

یہ بڑی بڑی گزلیں جو میلاد نبوی کی عید منانے ہیں اور غرسے وغیرہ لگاتے ہیں اور عیدوں وغیرہ کرتے ہیں اس کی حکمت کیا ہے؟ کیا یہ بدعت ہے یا نہیں؟ کیا یہ آپ صلی اللہ علیہ وسلم کی پیروی ہے؟ براہ راست میرا ہی جواب عنایت فرمائیں۔
 حسین۔

الحیاء سارگرمی

مردودہ طریقہ میلاد اور میلاد النبی کے مخصوص ایام کو بطور عید منانے کا نہ تو خود انصافیت کی حیثیت ہے اور نہ آپ کے صحابہ و تابعین اور تبع تابعین کے دور میں اس کا ذکر یا ثبوت ملتا ہے۔ جبکہ مردودہ طریقہ لاکھوں ایکسٹریمازمیوں کو مستحق تسلیم کرنے کی وجہ سے کسی صورت جائز نہیں۔ اس سے احتیاط واجب ہے۔

فہم الحادک الفتاویٰ: ومن چلنا ما احده من البدع من تصاد حد من ذہن من اکبر العلماء والحمد للہ انما یطویر فی شہر رجب الاول من المولد وقد احتج ذہن علی بدع وکجومات چلہ من ذہن استقامتہ الخافہ ومصدر آلات العرب من المار المصر من التشاہد وغیرہ ما جعہ اولہ المصاحف ومحقا لہ ذہن علی المولد الذیہ فیکونہ یثقلون واكثر لادستہ الخافہ وغیرہ وغیرہ: وقد مکمل شیخ محمد سام حادہ العمر والفضل احد بن جبرین علی المولد علیہ السلام اصل علی المولد بدعة لم یثقل من احد من السلف العظام من القرن الاولیة وکتاب ذہن قد استنبط من حاسن ومن ذہن فی تحریک فی مصاب الی من وجہب حدھا کان بدعة حدة ولا خلاف فیہ

واللہ اعلم بالصواب
 جہ مہار حیدر محمد
 دہلی دارالعلوم دیوبند
 ۲۷ رجب الاول ۱۴۲۹ھ



ہمارے سوالات دیوبندی مکتبہ فکر سے.....!!!

محترم حضرات! آپ نے دیوبندی کتبہ فکر کی مرکزی درس گاہ جامعہ بخاری العالیہ کا فتویٰ ملاحظہ کیا۔ فتویٰ دیا گیا ہے کہ مہربہ طریقے سے میلاد اور رجب الاول کے مخصوص ایام کو بیلود عید منانا صرف اس لئے بدعت ہے کہ یہ آپ ﷺ کے بعد صحابہ کرام نے نہیں منایا۔ ہمارا سوال صرف اتنا ہے کہ جو کام دن رات دیوبندی فرقے کے علماء اور خواص کرتے ہیں، وہ کام بھی تو کبھی صحابہ کرام اور تابعین نے نہیں کئے؟

- ☆ کیا کبھی صحابہ کرام علیہم الرضوان اور تابعین نے تین دن مقرر کر کے اجتماع کیا؟
- ☆ کیا کبھی صحابہ کرام علیہم الرضوان اور تابعین نے تین دن مقرر کر کے تبلیغی دورہ کیا؟
- ☆ کیا کبھی صحابہ کرام علیہم الرضوان اور تابعین نے اپنے دارالعلوم کا سو سالہ اور بیڑہ سو سالہ جشن منایا؟
- ☆ کیا کبھی صحابہ کرام علیہم الرضوان اور تابعین نے جشن نزول قرآن کا انعقاد کیا؟
- ☆ کیا کبھی صحابہ کرام علیہم الرضوان اور تابعین نے شہینے کا اہتمام کیا؟
- ☆ کیا کبھی صحابہ کرام علیہم الرضوان اور تابعین نے خلفائے راشدین کے ایام سرکاری سطح پر منانے کا مطالبہ کیا؟
- ☆ کیا کبھی صحابہ کرام علیہم الرضوان اور تابعین نے خلفائے راشدین کے ایام پر تعطیلات کا مطالبہ کیا؟
- ☆ کیا کبھی صحابہ کرام علیہم الرضوان اور تابعین نے خلفائے راشدین کے ایام پر جلوس نکالنے؟
- ☆ کیا کبھی صحابہ کرام علیہم الرضوان اور تابعین نے سیرت النبی ﷺ کا نفرس کا انعقاد کیا؟
- ☆ کیا کبھی صحابہ کرام علیہم الرضوان اور تابعین نے پیغام رحمتہ للعالمین کا نفرس کا انعقاد کیا؟
- ☆ کیا کبھی صحابہ کرام علیہم الرضوان اور تابعین نے 12 ربیع الاول کی رات محفل حسن قرأت کا اہتمام کیا؟
- ☆ کیا کبھی صحابہ کرام علیہم الرضوان اور تابعین نے خلفائے راشدین کا نفرس کا انعقاد کیا؟
- ☆ کیا کبھی صحابہ کرام علیہم الرضوان اور تابعین نے یوم اذواج مطہرات کا انعقاد کیا؟
- ☆ کیا کبھی صحابہ کرام علیہم الرضوان اور تابعین نے یوم بیت المقدس منایا؟
- ☆ کیا کبھی صحابہ کرام علیہم الرضوان اور تابعین نے یوم محمد بن عبد اللہ کا منام منایا؟
- ☆ کیا کبھی صحابہ کرام علیہم الرضوان اور تابعین نے عظیم الشان ختم بخاری کا اہتمام کیا؟
- ☆ کیا کبھی صحابہ کرام علیہم الرضوان اور تابعین نے ختم بخاری کے اختتام پر کھانا کھلایا؟
- ☆ کیا کبھی صحابہ کرام علیہم الرضوان اور تابعین نے جنازوں کے ساتھ جلوس نکالا؟
- ☆ کیا کبھی صحابہ کرام علیہم الرضوان اور تابعین نے ذوالحورین کا نفرس کا انعقاد کیا؟

☆ کیا کبھی صحابہ کرام علیہم الرضوان اور تابعین نے خُسنِ انسانیت کا نفِرس کا اعتقاد کیا؟

☆ کیا کبھی صحابہ کرام علیہم الرضوان اور تابعین نے آزادی کشمیر کے موقع پر جلوس نکالا؟

☆ کیا کبھی صحابہ کرام علیہم الرضوان اور تابعین نے توہینِ مرسالت کے خلاف جلوس نکالا؟

☆ کیا کبھی صحابہ کرام علیہم الرضوان اور تابعین نے باطل قوتوں کے خلاف جمنڈوں سمیت جلوس نکالا؟

☆ کیا کبھی صحابہ کرام علیہم الرضوان اور تابعین نے توہینِ آئمہِ مغلّوہوں کے خلاف کبھی جلوس نکالا؟

☆ کیا کبھی صحابہ کرام علیہم الرضوان اور تابعین نے مفتی محمود کا نفِرس کا کبھی اعتقاد کیا؟

☆ کیا کبھی صحابہ کرام علیہم الرضوان اور تابعین نے مفتی شامزئی کی یاد دہانی اور جلسہ رکھا؟

☆ کیا کبھی صحابہ کرام علیہم الرضوان اور تابعین نے مساجد کے بڑے بڑے بلند مینار بنوائے؟

☆ کیا کبھی صحابہ کرام علیہم الرضوان اور تابعین نے مساجد کے میناروں میں جگہ جگہ جیتی لائٹیں لگا دیں؟

☆ کیا کبھی صحابہ کرام علیہم الرضوان اور تابعین نے کبھی تحفہ ہزارں کا نفِرس کا اعتقاد کیا؟

☆ کیا کبھی صحابہ کرام علیہم الرضوان اور تابعین نے کبھی لال مسجد کے شہداء کی برسی منائی؟

اس کے علاوہ بھی کئی ایسے کام ہیں جو کبھی صحابہ کرام علیہم الرضوان اور تابعین کرام نے نہیں کیے مگر پوری دیوبندیت ان کاموں کو شایانِ شان طریقے سے سراغِ تمام دیتی ہے اور کروڑوں، اربوں روپے اس پر خرچ کرتی ہے۔ اب ان کے کتوے کے مطابق یہ تمام کام بدعت نہیں ہوئے؟ جواب دو.....!!!

اور اپنے کارناموں کو صحابہ کرام علیہم الرضوان اور خیر القرون کے عمل سے ثابت کرو۔۔۔؟

اہلسنت کے عقائد اور فقہ حنفی پر کیچڑ اچھالنے
والے اور فقہ حنفی، شافعی، حنبلی اور مالکی چاروں
مذہب کو بدعت اور نئی ایجاد کہنے والے غیر مقلدین
اہلحدیث حضرات اپنے کارناموں اور طریقوں کو
قرآن وحدیث سے ثابت کریں؟

غیر مقلدین اہلحدیث جواب دیں؟

کیا کبھی حضور ﷺ اور صحابہ کرام علیہم الرضوان نے یہ کام سرانجام دیئے؟

کیا کبھی صحابہ کرام علیہم الرضوان اور خیر القرون نے نیا اسلامی سال منایا
اور عورتوں کا تبلیغی اجتماع دن مقرر کر کے منعقد کیا

جنوری، فروری 2007ء ☆ تبلیغی سلسلہ نمبر 24 ☆ محرم، صفر 1428ھ

قال اللہ تعالیٰ
قل انما الذعر لومی ولا اشرك به احدا
ترجمہ: (اے نبی صلی اللہ علیہ وسلم) کہہ دیجئے کہ میں صرف
اللہ رب کو پارتا ہوں (اور میں کوئی شریک اس
کے ساتھ شریک نہیں مقرر کرتا) (سورہ اعراف: 32)

قال النبی صلی اللہ علیہ وسلم
من تعلق بحیمة لقد اشرك
ترجمہ: (اے نبی صلی اللہ علیہ وسلم) نے فرمایا میں
نے تعویذ (حیمة) لکھا اس شخص کی کہ
(صفر 1428ھ، 4)

تقسیم الاسلام
جلد اول
جلد دوم
جلد سوم

شعبہ خواتین برائے الدعوتہ کے زیر اہتمام

تبلیغی و اصلاحی خواتین کا اجتماع

کلید: فاطمہ الزہراء علیہا السلام
محلہ: کراچی، پاکستان

116 فروری 2007ء بروز اتوار بوقت 2:00 بجے

خصوصی خطاب
امام ابو بکر صاحبہ
بہاول پور

اس سب سے پہلے منسلک خطبات و مباحثہ کی حتمی فہرست
مقام: اسلامیات کونسل سے برائے خواتین کی پڑھنا چاہئے

اس سب سے پہلے منسلک خطبات و مباحثہ کی حتمی فہرست
مقام: اسلامیات کونسل سے برائے خواتین کی پڑھنا چاہئے

کلید: فاطمہ الزہراء علیہا السلام

6

کل عام و انتم بخیر

دنیا میں اسلام کی ابدی صداقتوں کے فروغ اور
انسانی رفعتوں کی بقا و تحفظ کی دعاؤں کے ساتھ

بھری سال نو 1428ھ

بکے روشن طلوع پر بحین "تقسیم الاسلام"
کی جانب سے پورے عالم اسلام کو مبارک باد
(ادارہ تقسیم الاسلام احمد پور شرقیہ)

ہمارا سوال

☆ عبد اللہ بن ابی بکر صلی اللہ علیہ وسلم کی مبارکباد و بدعت قرار دینے والے غیر مقلدین احمد بن حنبلہ اور خیر القرون نے بھی نیا اسلامی سال
کی مبارکباد دی؟
ہاں کبھی خواتین کا تبلیغی و اصلاحی اجتماع دن مقرر کیا ہے منعقد کیا؟ پس اگرچہ آج عورتوں نے اس سے خطاب کیا؟

کیا کبھی صحابہ کرام علیہم الرضوان اور خیر القرون نے دن مقرر کر کے علماء کا نفرنس کا انعقاد کیا

نمبر 10، مئی 2007ء

73

نمبر 10، مئی 2007ء



مقام نیت و رسالت

علماء کا نفرنس

10 مئی 2007ء

جامعہ سعیدیہ

پروگرام

پیش کش: جامعہ سعیدیہ، لاہور

اس کی ضرورت علماء و ائمہ کے درمیان سے مشفقہ فرمائی گئی ہے۔ علماء کے ایک مخصوص مجالس میں حالات حاضر کے احاطہ میں رہتی ہوئی اس کے بارے میں بحث و مباحثہ کی جائے گی۔ اس کے علاوہ اس میں شرعی مسائل پر بھی بحث ہوگی۔

شاہدہ سعیدیہ
ایک ایسی روحانی مرکز ہے جس کی اساس
والہیت کی تحریک حیات اور عمل احادی
نعمت و نوری کی کامیاب ادارہ ہے۔

عبدالرحمن سعیدی

درس قرآن
شیخ الحدیث
مولانا عبداللہ ناصر صافی

• شریعت و فہم و احکام
• فقہ و فہم و احکام
• فقہ و فہم و احکام

فون 065-2552917

بھارا سوال

کیا کبھی وہ صحابہ و خیر القرون میں دن مقرر کر کے علماء کا نفرنس کا انعقاد کیا گیا؟ کیا یہ دن میں اضافہ اور بدعت نہیں؟

کیا کبھی صحابہ کرام علیہم الرضوان نے اس طرح نماز تراویح کا اہتمام کیا؟ اپنے نام کے ساتھ سلفی لکھا؟



سلسلہ نمبر 87 جمعہ المبارک 2 رمضان المبارک 1431ھ بمطابق 13 اگست 2010ء

[illegible]

نماز تراویح
جامع مسجد امیر بلاک آئی ناتھہ ناظم آباد
اختریضیاء
قاری امامت
بند سراج محلہ ادا دیت لا خاصہ بیس سوک
جامع مسجد امیر
بلاک آئی نزد رانی اسکول ناتھہ ناظم آباد
Ph: 0300-923541

ہمارا سوال

فیر حلقہ میں اچھڑت ہو کہ ہر بات کی دو در رسالت اور دو در کتاب سے نسل آتے ہیں۔ اب ہم ان سے بچتے ہیں کیا کسی دو در رسالت یا دو در کتاب سے کسی طرح غلط فہم تراویح کا بعد اسادینہ کا خلاصہ پیش کرنے کا اہتمام کیا گیا؟

کیا کسی صحابہ کرام علیہم السلام نے اپنے نام کے ساتھ کسی مسلمان بھائی کو ہٹا کر غلطی بھائی لکھتا کہاں سے ثابت ہے؟

اور اس سے کہہ دو کہ جسے وہاں کے اور شاہی حکماء نے قتل کیا ہے ان کے لئے
 اس کی ضمانت کی بنیاد پر
 ضرب موثر
 14 جولائی 44 شمارہ 456
 14 جولائی 44 شمارہ 456
 14 جولائی 44 شمارہ 456

صحیحہ کراولین سیتھ کا چتر اعظمیہ کا ہر وہ
 علماء کو تسلیم

[illegible]

صحابہ کرام و اہلبیت اطہار رضوان اللہ علیہم اجمعین سے عقیدت و احترام کو اسلام و ایمان کا جزو ثمران دینے والے مسخودی مولوی جواب دیں کہ اگر آپ واقعی
 تمہارے نزدیک ان سے عقیدت و محبت ایمان کا جزو ہے تو پھر جنت المغنی کدہ مگر اور جنت البقیع مدینہ منورہ میں موجود صحابہ کرام، اہلبیت اطہار اور اہل باج
 مطہرات کے حاضرات کی بے حسی کیوں؟ مسماوے برحق کر کے جہان کی آرام گاہوں پر چھاڑ چھاڑا دوش اور جہن کی پیشانی کیوں مسکتی کی؟ سید
 آدم رضی اللہ عنہما کے حاشیف کو توڑ پھوڑ کس پر چڑھ کر چڑھ کر پھر اس پر گڑا کرکت کیوں پھینکا گیا؟

کیا تمہاری صحابہ کرام، اہل بیت اور اہل جہنم سے یہی عقیدت ہے کہ ایک طرفت ان سے جھوٹی محبت کا دعویٰ کرادو دوسری جانب ان سے نفرت رکھنے والی چیزوں کی بے خبری کرو؟

کیا بھی صحابہ کرام علیہم الرضوان اور خیر القرون سے اس کی نظیر ملتی ہے

جنوری 2007ء

35

کتابتہ المصاحف

افتتاح

جامع سید عبدالعزیز بن ابراہیم اہل بیت الشوقی

بتاریخ: 27 جنوری بروز جمعہ 2007ء بوقت اللہ بقاء جگہ لوہاراں

ضمیمہ شریف
محرم جناب
تاری
محمد یعقوب صاحب
فہرست کتب و تصانیف
سعودی عرب

نفلہ الشیخ محرم جناب
خانصاحب
محمد شہزاد چنگوانی

ضمیمہ شریف
محرم جناب
محمد لوئیس بیٹ
مروفاقی الشیخ المصطفیٰ
فلاحیت

محرم جناب
سید احمد
میتاں محمد علی صاحب
امریکا

محرم جناب
عبدالرزاق صاحب
امریکا

محرم جناب
احمد سعید صاحب
آف کبیر والا

نوٹ: خواجہ سید علیہ پردہ کا حق و سبب نام لکھنا • دوسری اسٹیج کے لئے کھانے کا بندوبست ہوگا۔

خالد حمید مفتاح بن مسی عبدالعزیز بن ابراہیم الشوقی
0999-506618-506619
0999-683462

ہمارا سوال


ہم کیا کچھ دور رسالت اور صحابہ میں اس طرح مسجد کا افتتاح کیا گیا؟
ہم اشتیاق کے ساتھ پوچھتے ہیں کہ؟ خواتین کو بلایا گیا؟ ہندو مت کا اس طرح اہتمام کیا گیا؟

جنوبی، 2007ء

يسمى ذلك الرحمن الرحيم

آغاز
تکمیل

بتاریخ 16 فروری 2007 بروز جمعہ المبارک



قاری الغنی ثاقب
محمد اسحاق
تالیف
پیش روئے

نوٹ: خواتین کیلئے پردہ کا مشیقل آہوگا۔ بیرونی مہمانوں کیلئے کھانے کا اہتمام ہوگا۔

انتظامیہ جامع مسجد القادریہ اور ماون
کے الی فی روضہ مہدیہ

☆ کیا کبھی دور رسالت اور دور صحابہ کرام میں اس طرح مسجد کا افتتاح کیا گیا؟

☆ اہتمام کے ساتھ پوسٹر چھپوائے گئے؟ خواتین کو بلا یا گیا؟ دعوت کا اس طرح اہتمام کیا گیا؟

کیا کبھی دور رسالت، دور صحابہ یا خیر القرون کے دور میں دن مقرر کر کے تین روزہ سالانہ اجتماع منعقد کیا گیا

MONTHLY
MAJALLAH

AL-DAAWA

Regd. No. CPL-12

LAHORE
PAKISTAN

نفاذ طیب کے 300 سے
زائد شہداء کے وارثوں اور
کتاب سنت کے فانیوں کا

مرکز بھی

نمبر 1997

7

6

5

جموعہ

جمعہ

نہد

مرکز طیب سیریل کے

بقا

مجاہدین لشطیہ مرکز الدعوة والارشاد
5، چیمبر لین، مؤسسہ سیریل وارنہ لاہور
231105 7665878

کیا کبھی صحابہ کرام علیہم الرضوان اور خیر القرون نے ہر سال اہل حدیث کا نفرنس کا انعقاد کیا



مرکزی جمعیت اہل حدیث جام پور کے زیر اہتمام ۲۹ ویں سالانہ عظیم الشان

اہل حدیث کا نفرنس جام پور
 بمقام جامعہ محمدیہ اہل حدیث

زیر صدارت

زیر قیادت

حضرت مولانا محمد حسین صاحب راقی
 مدیر ادارہ تبلیغ اسلام جام پور
 ڈپٹی سیکریٹری جنرل مرکزی جمعیت اہل حدیث پاکستان

فضیلت الشیخ حافظ عبد الکریم صاحب
 ناظم اعلیٰ مرکزی جمعیت اہل حدیث پاکستان
 مدیر کلیتہ البسات ذریعہ ناز و خان

مقررین

ترجمان اہل حدیث مولانا سید محمد سبطین شاہ نقوی صاحب سرودھما
 حضرت مولانا عبید اللہ صاحب انور جہانیاں

شر پنجاب حضرت مولانا منظور احمد صاحب گوہر اوالہ
 مقرر شیریں بیان حضرت مولانا حافظ محمد بنیامین اذکار

و دیگر خطباء و مقامان شاملا

محمد اسماعیل صاحب مدیر جامعہ محمدیہ اہل حدیث جام پور فون: 06414-567218 سہیل: 0333-8556472, 0333-8556473

تفصیلی اخبار و تقریب شائع کیا جا رہا ہے۔ ذریعہ قاری خان۔ راجن پور، قریب دھار کے صاحب مختار ہیں

کیا کبھی صحابہ کرام علیہم الرضوان اور خیر القرون نے دلالت مقرر کر کے ہر سال تین روزہ قرآن وحدیث کا نفرس کا انعقاد کیا؟

تایم روزہ الانہ قرآن وحدیث کا نفرس

بفضل اللہ تعالیٰ مرکزی جماعت غریباہل حدیث کراچی کے زیر اہتمام

بتاریخ ۲۸، ۲۹، ۳۰ ربیع الثانی ۱۴۳۰ھ
بمطابق 25، 26، 27 اپریل 2009ء
بروز ہفتہ اتوار پیر ان شاء اللہ تعالیٰ

بمقام جامعہ ستاریہ اسلامیہ اور محمد بن قاسم روڈ

بے حد ترک و احتشام سے منعقد ہو رہی ہے۔
جن میں جید علمائے کرام، محقق و دانشورانِ خلاب فرمائیں گے۔
قرآن وسنت کے نور سے اپنے قلوب روشن کر کے مالا مال ہو جائیں۔
ہر دینی احباب کے لئے قیام، طعام کا انتظام
اللہ کے فضل و کرم سے مرکزی جماعت غریباہل حدیث
اپنی آمد سے مرکز کو نسرور مطاع فرمائیں۔

شعبہ
نشر و اشاعت
مرکزی دارالامارت جماعت غریباہل حدیث
محمدی مسجد محمد بن قاسم روڈ کراچی
021-2628102
2216835
2632827

کیا کبھی صحابہ کرام علیہم الرضوان اور خیر القرون نے دن مقرر کر کے ہر سال تین روزہ قرآن وحدیث کانفرنس کا انعقاد کیا؟

Sohifa Aale-Hadees

تین روزہ سالانہ قرآن وحدیث کانفرنس

بفضل اللہ تعالیٰ مرکزی جماعت غر باہل حدیث کراچی کے زیر اہتمام

بتاریخ ۲۲، ۲۳، ۲۴ ربیع الاول ۱۴۳۰ھ
بمطابق 21، 22، 23 مارچ 2009ء
بروز ہفتہ اتوار پیر
ان شاء اللہ تعالیٰ

(بمقام) جامعہ ستاریہ اسلام آباد اور محرمین قائم رو

بے حد متحرک و احتشام سے مستعد ہو رہی ہے۔
جس میں جید علمائے کرام، محقق و دانشوران خطاب فرمائیں گے۔
قرآن وسنت کے نور سے اپنے قلوب کو منور کر کے۔ لامل ہو جائے۔
بیرہنی احباب کے لئے قیام و طعام کا انتظام
سہ کے فضل و کرم سے مرکزی جماعت کرے گی۔
اپنی آمد سے مرکز کو ضرور مطلع فرمائیں۔

مرکزی دارالامارت جماعت غر باہل حدیث

نشر و اشاعت شعبہ

021-2628102
2216838

محمد یحییٰ محمد بن قاسم و کراچی

کیا کمی صحابہ کرام علیہم الرضوان اور خیر القرون نے عظیم الشان طریقے سے احرام رمضان کا نفرنس کا انعقاد کیا؟

بسم اللہ الرحمن الرحیم
 محمد ذو فضل علی وسنہ الکریم /
 مدنی، علمی، سماجی، اخلاقی اور قانونی مصلحتیں ہیں کوکھڑا
 پندرہ روزہ
صحیفہ اہل بیت
 ۱۶ ربیع الثانی ۱۴۳۱ھ / ۱۵ اگست ۲۰۱۰ء / شمارہ نمبر ۹۶

نہایت

عبدالرحمن سلفی

۲۰۰۹

جماعت غریبہ اہل بیت

نہایت

احقر مضامین

کا نفرنس

جماعت غریبہ اہل بیت

Ph: 32626102 • 32216835

۲۰۰۹

جماعت غریبہ اہل بیت

نہایت

احقر مضامین

کا نفرنس

جماعت غریبہ اہل بیت

Ph: 32626102 • 32216835

کیا کبھی صحابہ کرام علیہم الرضوان اور خیر القرون نے تربیت حج کا نفرس کا انعقاد کیا؟

Sahifa Ahi-e-Hadi

۲

۱۴۳۰ھ

عبد الرحمن سیفی

محمد بن عبد الرحمن سیفی

جماعت غریبہ (العلویہ)

عبد الرحمن سیفی

محمد بن عبد الرحمن سیفی

جماعت غریبہ (العلویہ)

عبد الرحمن سیفی

محمد بن عبد الرحمن سیفی

جماعت غریبہ (العلویہ)

عبد الرحمن سیفی

محمد بن عبد الرحمن سیفی

جماعت غریبہ (العلویہ)

عبد الرحمن سیفی

محمد بن عبد الرحمن سیفی

جماعت غریبہ (العلویہ)

عبد الرحمن سیفی

محمد بن عبد الرحمن سیفی

جماعت غریبہ (العلویہ)

عبد الرحمن سیفی

محمد بن عبد الرحمن سیفی

جماعت غریبہ (العلویہ)

عبد الرحمن سیفی

محمد بن عبد الرحمن سیفی

جماعت غریبہ (العلویہ)

احکام فضائل مناسک حج

تربیت حج

مخالفات

جماعت غریبہ (العلویہ)

جماعت غریبہ (العلویہ)

جماعت غریبہ (العلویہ)

جماعت غریبہ (العلویہ)

جماعت غریبہ (العلویہ)

جماعت غریبہ (العلویہ)

جماعت غریبہ (العلویہ)

جماعت غریبہ (العلویہ)

بنيلا مصطفیٰ کا نفرنس **صلی اللہ علیہ وسلم** کو بدعت کہنے والے تین رسالت کا نفرنس منار ہے ہیں

جماعتی خبریں

دلوں کو انصاف سے نواز دیا گیا جو کہ مذہب ذیل ہیں۔

| | | |
|---------------|--------------------|-------------------|
| شعبہ حفظ | دس نکاحی کلاس چارم | دس نکاحی کلاس اول |
| اسن صدیقی اول | ادارہ بانگی اول | مفتی بہت اول |
| مہر شاہی دوم | اسن صدیقی دوم | ناہر شریف دوم |
| ناہر شریف سوم | - | میرزا ابوب سوم |

انصاف مولانا حسن محمد صاحب امیر جماعت خیراء اہلحدیث ضلع
نوجوا نوالہ نے اپنے دست مبارک سے طالب علموں میں تقسیم کئے۔
تقسیم انصاف کے بعد مقرر خیریں زبان آواز یزدانی
کاری ضیف ربانی صاحب نے خصوصی خطاب فرمایا جس میں
انھوں نے سیرت امیر حکیم علیہ السلام کے موضوع پر خطاب فرمایا۔
سب سے آخر میں مولانا حسن محمد صاحب نے دعا فرما کر آج
کی اس کا نفرنس کا اختتام فرمایا۔

کا نفرنس مولانا حسن محمد صاحب امیر جماعت خیراء اہلحدیث
ضلع نوجوا نوالہ کی زیر صدارت ہوئی اور ضلع نیکو پری کے نفرنس
مولانا محمد اور نس باگی صاحب نے سہرا انجام دیے۔ ملا دو ازہی
امیر جماعت خیراء اہلحدیث ڈھڈیال ضلع چکوال، مانی محمد شفیق
خان نائب امیر ضلع پیدل، جناب نوازہ اقبال خان شروانی امیر
ضلع راجن پور، مولانا نور الحق صاحب آف ضلع پورہ، مولانا عبد
الکریم، مولانا امیر جماعت احمدی، عبدالعزیز آف مہر والہ،
محمد اعجاز آف احمدی اور دیگر کئی اصحاب جماعت نے ہیرا
لا اور سے شرکت فرمائی۔

راج رتاز = ایمر بکر صدیق ضلع محمد لغمان کوثر

○ کارروائی شان رسالت کا نفرنس

برساتی طرح اس سال بھی وارادہ سے جا سدا ہوا ہے
ملا۔ یہ اقامت کے نتائج پر 13 مئی بروز بدعت نماز مشاہد تقسیم
انصاف کے سلسلے میں ایک کا نفرنس منعقد ہوئی اس کا نفرنس کا
منعقد ہونا اسلام کی راہی سے لوگوں کو آگاہ کرنا تاکہ وہ اپنے
بچوں کی بدست تقسیم قرآن سے تیس اور انہیں اپنی ضیف کی تعلیم
سے آزاد کرے دینا اور آخرت کی کامیابیوں سے جھکے رہ
سکیں اور اس کے ساتھ ساتھ وہ سہرا منعقد طالب علموں کی حوصلہ
افزونی بھی ہوتا ہے تاکہ وہ اپنے سے زیادہ محنت کریں۔ اور اس
دفتر انصاف نہ حاصل کر سکنے والے طالب علم آئندہ سال انصاف
مائل کرنے کی خواہش میں پہلے سے زیادہ محنت کر کے اپنی
پوزیشن حاصل کر سکیں۔

کا نفرنس کا آغاز تلاوت قرآن پاک سے ہوا جو کہ جا سدا ہوا
کے طالب علم جمیعاً صرف رحمانی نے ہی اس کے بعد اور بھی بہت
سے طالب علموں نے تلاوت قرآن پاک چون کی۔ تلاوت پاک کے
بعد جا سدا سے صاحب مہربان آکر نے تحت رسول قبول ہوئی۔

تحت رسول منبیل علی اللہ علیہ وسلم کے بعد مقررین نے
خطبات سے لوگوں کو آگاہ کیا جس میں مولانا اختر محمدی صاحب
خطیب جامع مسجد محمدی خیراء اہلحدیث نے شان رسالت پر مفصل
خطاب فرمایا اس کے علاوہ مولانا اکرم شاہ وادی اور فاروق اور
مولانا احسان رحمانی آف اکوڑ نے بھی خطاب فرمایا۔ اس کے
بعد تقسیم انصاف کے سلسلہ شروع ہوا جس میں اورس نکاحی کی مکی اور
چوکی اور شعبہ حفظ میں مکی اور سری اور نیو پری پوزیشن حاصل کرنے

ہمارا سوال

میلاد مصطفیٰ کا نفرنس کو بدعت اور جہنم میں اضافہ کہنے والے غیر مقلدین اہلحدیث اپنی اس دس شان رسالت کا نفرنس منار ہے ہیں۔ تلاوت قرآن و تحت
شریف اور خطبات ہمارے کیا یہ کارنامہ علیہم الرضوان اور غیر القرآن سے ثابت ہے؟ کیا کسی صحابہ کرام علیہم الرضوان اور غیر القرآن نے اس طرح انجام کیا؟

کیا کبھی صحابہ کرام علیہم الرضوان اور خیر القرون نے اس طرح عظیم الشان اصلاح معاشرہ کا نفرین منائی؟

تخلصه و نفسی عمر و شیر و شکر و نم

م. هـ. جنم، مياس، طلاق و ناراضی قلبیه، پنهان کردن و

پندرہ روزہ
صحیفہ اہل تشدد
کراچی

ملک نمبر ۹۱

نمبر ۱۶ برائے ایف ڈی آر ۳۰۳۰۔۲۵۰

شمارہ نمبر ۱۱۰

011111 111111

• • • • •

定本

ماہنامہ جولائی ۲۰۰۹ء

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

سازمان جوانان انقلابی

جماعت غزابلہ محدث کے زیر اہتمام دعوت و تبلیغ کے اجتماعات

عبدالرحمن

اصلاح معاش کا نقشہ

پاکستان کی ساری قومیں

قادی محمد
سے تھی الہ

مفت محمد اویسی سلفی

محمد افضل شيخ جابر بن عبد الله

شاید محمد صادق

جواد بن محمد

محکم دلائل سے مزین متنوع و منفرد موضوعات پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ

الحق شایده محمد احمد نجی

فی حقہ حمید القدر شاہ
فی حقہ حمید القدر شاہ

عبدالحی خاند

عبد الخالق افریدی

معارف

احمد حسن - عبد الوكيل

سید ابوالحسن علی

دلاؤنگان چما

محمدی مسجد
مہرٹ قاضی و کراچی

Ph: 26111111

28102-2216835

تاریخ

سید ذوالکرم

ہماری نسبتوں کو بدعت کہنے والو! کیا کبھی صحابہ کرام علیہم الرضوان نے اپنے نام کے ساتھ سلفی، ندنی، یکی اور محمدی لکھا؟

اب گئے اور اونٹ کی قربانی مرحومین (غیر اللہ) کی جانب سے کیسے جائز ہو گئی؟

Ahle-Hadis

قربانی کی کتابیں

جامعہ ستاریہ اسلامیہ (بلاک نمبر 6 گلشن اقبال)

اور

مدرسہ عربیہ اسلامیہ دارالسلام (محمدی مسجد پرنس روڈ)

کے دینی طلباء کے لیے عنایت کیجئے۔

یہاں ۱۰۰ روپے آئے ہوئے طلباء قرآن و حدیث کا کم حاصل کر رہے ہیں جامعہ میں مقیم تارو طلباء کے تمام اخراجات جامعہ میں منسلک اللہ چوب گنتے ہوتے ہیں۔ دور حاضر میں دینی علوم سے جس قدر دوری ہو رہی ہے اس کا تقاضہ ہے کہ تمام مسلمان دینی مدارس کو اپنی اعانت سے زیادہ سے زیادہ تقویت پہنچائیں اور اسلامی علوم جامعہ ستاریہ اسلامیہ اور مدرسہ اسلامیہ دارالسلام کے ساتھ جبر پور تعاون فرمائیں۔ عید الاضحیٰ کے موقع پر دینی اداروں کے ماحقوہاں کی صورت یہ ہے کہ آپ قربانی کی کتابیں اور گوشت چمہ اور مدرسہ کے لیے بری یہ آپ کے ہر تعاون کی سہولت ہیں۔ یہ دینی احباب کتابیں فروخت کر کے اس رقم میں آؤ روپے روانہ فرما دیں۔ وسیع پیمانہ پر ہوتی جائے گی۔

کراچی کے مختلف مقامات پر 50 سے زائد ذیلی مراکز قائم ہیں۔ آپ کے اکیسوں میں جامعہ کے طلباء اور دیگر کارکن آپ کی خدمت میں پہنچ جائیں گے۔ (ان شاء اللہ)

گائے اور اونٹ کی قربانی میں اپنی طرف سے یا مرحومین کی جانب سے حصہ ڈالیں

برسوں کی طرح اس سال بھی مرکزی جانب سے شراکتی قربانی کا استقبال انتظام کیا گیا ہے

5000/- اونٹ کی قربانی فی حصہ

5000/- گائے کی قربانی فی حصہ

32628102-32632692

34993313-34818184

محمدی مسجد (پرنس روڈ)

جامعہ ستاریہ اسلامیہ (گلشن اقبال)

رابطہ
کلیئر

ناظم چیم قربانی

حافظ عبدالجبار سلفی

ہمارا سوال

فرمانہ کے احوال قرآن کیلئے قربانی اور اونٹ یا زکواہ کر کے والے غیر متقدمین احمدیہ اشتہار دے رہے ہیں کہ انے اور اونٹ کی قربانی اپنے مرحومین کی جانب سے ہے۔ جب یہ لوگ کے اصول پر کیلئے کی جانے والی نذر یا زکواہ اور جانوروں کی قربانی آپ کے نزدیک حرام ہے تو یہ کہہ کر آپ آپ کے لیے کیسے جائز ہو گیا؟

کیا کبھی دور رسالت یا دور صحابہ میں مجاہد کسان کا نفرنس اور علماء سیمینار کی تقاریب کا انعقاد کیا گیا؟

The Weekly
GHAZWAH
Lahore

ہفت روزہ

مہینہ ستمبر

لاہور

جلد 3 شمارہ 33 17 تا 23 رجب 1425ھ مطابق 10 تا 16 ستمبر 2004ء

جامعہ الدعوة الاسلامیہ کے زیر اہتمام

تقریب صحیح بخاری
علماء سیمینار

خط نمبر ۱۰۰
اطعام و شربت کی درخواست ہے

پہلے دستہ علمائے اہل سنت
ماہنامہ و سہ ماہیہ طبعی و ادبی
تفصیلی نشست علمی و تہذیبی

شعبہ علماء دعوت و اصلاح جامعہ مجاہد کسان سیمینار برقی لاہور
042-7240946
0300-9426941

مجاہد کسان کے زیر اہتمام

مجاہد کسان کا نفرنس

جلد 10 شمارہ 12 ستمبر 2004ء ہے

پروفیسر حافظ محمد سعید

عالمی مشہور احمدیہ کسان برائے الدعوة پاکستان لاہور

ہمارا سوال

دین میں کئی چیز ایجاد نہ تھیں۔ یہ بدعت ہے۔ پھر یہ مجاہد کسان کا نفرنس اور علماء سیمینار جو کہ دور رسالت اور دور صحابہ میں نہیں ملتا۔ جانتے سمجھتے انہیں بدعت نہیں...

کیا کبھی دور رسالت یا دور صحابہ میں قرآن وحدیث کا نفرتس منعقد ہوئی؟

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

چلو چلو جاہلہ ستارہ شہیدان چوک بزنس روڈ چلو ضلع ملکر چلو

مرکزی جامعہ اسلامیہ دارالافتاء دارالحدیث دارالعلوم دارالکتاب دارالعلوم دارالافتاء دارالحدیث دارالعلوم دارالکتاب

72 سالانہ مرکزی اجتماع

نشر قرآن وحدیث کا نفرتس

زیر امانت: تحفہ ذوالقرنین رضوی

جماعت
27 اپریل 2009
محمدی چوک بزنس روڈ

پاکستان
ہفتہ 25-26 اپریل
جامعہ اسلامیہ دارالحدیث دارالعلوم دارالافتاء دارالحدیث دارالعلوم دارالکتاب

ملک بھر سے ممتاز جید علماء کرام، محدثین، ائمہ، مجاہدین بزرگ، قراء و شعراء شریف لارہے ہیں
کا نفرتس میں آپ اور آپ کے دوست احباب رفقاء و کار شرکت کو لازمی مانتین۔ شکریہ

انشاء اللہ
تمام اجتماع
بعد نماز عشاء
ہوگا۔

مرکزی دارالافتاء دارالحدیث محمدی مسجد محمد بن قاسم روڈ کوہ اچھا
فون: 2628102-2216835-4818184-4993313
فکس: 4979952-2632827 ویب سائٹ: www.jga.org

الہامی
الی
الغیر

ہمارا سوال

ملازمین کا نفرتس پر اعتراض کرنے والے قرآن وحدیث کا نفرتس کی جوت ہیں؟

کیا کبھی دور رسالت یا دور صحابہ میں قرآن وحدیث کانفرنس منعقد ہوئی؟

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

چلو چلو جاؤ ہمہ شتاریہ شہیدین چوک برنس روڈ چلو متب ملکر چلو

مرکزی دارالانوار محمدی کراچی کے زیر اہتمام منعقد ہونے والی کانفرنس

72 ویں سالانہ مرکزی اجتماع

قرآن وحديث کانفرنس

زیر اہتمام: شعبہ دارالانوار محمدی کراچی

پندرہویں
مئی 27 اپریل 2009
محمدی چوک برنس روڈ

پندرہویں
25-26 اپریل
جامعہ دارالاسلامیہ کراچی

ملک بھر سے ممتاز جید علماء کرام، محققین، مفسرین، حضرات بزرگ، قراء و شعراء شریف لارہے ہیں
کانفرنس میں آپ اور آپ کے دوست احباب رکتہ و کار شرکت کو لازمی جانیں۔ شکریہ

انشاء اللہ
تاکثر ۱۰ اپریل
اپنی نماز میں
آمین

مرکزی دارالانوار محمدی مسجد محمد بن قاسم روڈ کراچی
فون: 4993313-4818184-2216835-2628102
ٹیکس: 4979952-2632827 ویب سائٹ: www.jgai.org

الداعی
الی
الخیر

شمارا سوال

میلاد مصطفیٰ کانفرنس پر اعتراض کہنے والے قرآن وحدیث کانفرنس کا ثبوت دیں؟

کیا دارشان انبیاء کا نفرنس کا انعقاد بدعت نہیں؟

JARRAR
Karachi

سلسلہ وار

1431ھ بمطابق 23 جولائی 2010ء، جہانگیر سٹی، پشاور، پاکستان

www.jararnews.com فون: 042-38720257

راولپنڈی میں مرکز خدیجہ میں ایشیائی انبیاء کا نفرنس کا انعقاد

راولپنڈی میں ایشیائی انبیاء کا نفرنس کا انعقاد

راولپنڈی میں ایشیائی انبیاء کا نفرنس کا انعقاد

کیا کبھی دور رسالت میں کتابوں کی تعارفی تقریب اور تقریب صحیح بخاری کا انعقاد کیا گیا

تقریب صحیح بخاری

25 جولائی 2010

حافظ عبد السلام بھٹوی

تقریب دعوت القرآن

تعارف تقریب

11 اگست بروز اتوار صبح 10 بجے

عبدالحمس

حافظ عبد السلام بھٹوی

محمد سعید

محمد سعید

محمد سعید

محمد سعید

محمد سعید

محمد سعید

محمد سعید

محمد سعید

محمد سعید

محمد سعید

محمد سعید

محمد سعید

محمد سعید

محمد سعید

محمد سعید

محمد سعید

کیا کبھی دور صحابہ و تابعین میں سالانہ تکمیل بخاری شریف کی تقریب کا انعقاد کیا گیا؟

امت مسلمہ اسلامی تعلیمات پر عمل کر کے
کامیابی حاصل کر سکتی ہے یہی ہمارا مقصد ہے

کراچی (خاص) ریڈیو پاکستان کراچی کے شعبہ اعلیٰ تعلیم و ثقافت کے زیر اہتمام منعقد ہونے والے سالانہ اجتماع میں شرکت کرنے والے علماء و محدثین نے کہا ہے کہ بخاری شریف کی تکمیل سالانہ اجتماع کا انعقاد ہونا ایک عظیم کام ہے، ان خیالات کا اظہار انھوں نے ہمارے ساتھ ساتھ منعقد ہونے والے 26 ویں سالانہ تکمیل بخاری شریف کی تقریب سے خطاب کرتے ہوئے کیا، تقریب کی صدارت ریڈیو پاکستان کراچی کے شعبہ اعلیٰ تعلیم و ثقافت کے زیر اہتمام منعقد ہونے والے سالانہ اجتماع میں شرکت کرنے والے علماء و محدثین نے کیا، ان کے بعد انھوں نے بخاری شریف کی تکمیل کے بارے میں گفتگو کی۔



روزنامہ ایکسپریس کراچی، 12 مارچ 2012ء، صفحہ 313
روزنامہ ایکسپریس کراچی، 12 مارچ 2012ء، صفحہ 313
روزنامہ ایکسپریس کراچی، 12 مارچ 2012ء، صفحہ 313

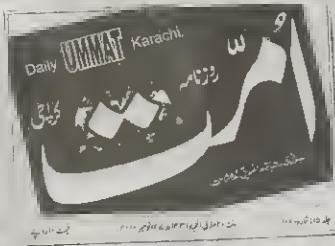
کیا کبھی حضور ﷺ یا صحابہ کرام علیہم الرضوان نے فتح مکہ کا نفرس کا انعقاد کیا؟



فتح مکہ قرآن کی قیادت و صداقت ثابت ہوتی ہے یہی ہمارا مقصد ہے

کراچی (خاص) ریڈیو پاکستان کراچی کے شعبہ اعلیٰ تعلیم و ثقافت کے زیر اہتمام منعقد ہونے والے سالانہ اجتماع میں شرکت کرنے والے علماء و محدثین نے کہا ہے کہ فتح مکہ قرآن کی قیادت و صداقت ثابت ہوتی ہے، ان خیالات کا اظہار انھوں نے ہمارے ساتھ ساتھ منعقد ہونے والے 26 ویں سالانہ تکمیل بخاری شریف کی تقریب سے خطاب کرتے ہوئے کیا، تقریب کی صدارت ریڈیو پاکستان کراچی کے شعبہ اعلیٰ تعلیم و ثقافت کے زیر اہتمام منعقد ہونے والے سالانہ اجتماع میں شرکت کرنے والے علماء و محدثین نے کیا، ان کے بعد انھوں نے فتح مکہ قرآن کی قیادت و صداقت کے بارے میں گفتگو کی۔

کیا کبھی دور رسالت اور دور صحابہ میں تحفظ ناموس رسالت کے نام پر جلوس نکالا گیا؟



دور رسالت کی تاریخوں اور صحابہ کی تاریخوں کی طرف کی گئی جس کا مقصد یہ ہے کہ دور رسالت اور دور صحابہ میں تحفظ ناموس رسالت کے نام پر جلوس نکالا گیا۔

ہمارا سوال

اچھوتے لڑتے کی سرکڑی تنظیم کا اندازہ جلیقہ الدعوتہ کی طرح کیا ملے گا کہ جلوسوں کے متعلق بدعت کا فتویٰ دیتے ہوئے کہتی ہے کہ کیا میلاد کے جلوس کبھی صحابہ کرام علیہم السلام نے نکالے اب ہم پوچھتے ہیں کہ کبھی صحابہ کرام علیہم السلام نے گستاخ رسول کے خلاف جھنڈوں سمیت جلوس نکالا؟

کہا کبھی دو در رسالت پاد اور صحابہ میں تقریب ختم بخاری، کسان کانفرنس، تقریب تقسیم اسناد کا انعقاد کیا گیا؟

The Weekly
GHAWAH
Lahore

سيفت روز

آمین

۹۴۵ شعبان ۱۴۲۵ھ بمطابق ۲۵ ستمبر تا یکم اکتوبر ۲۰۰۴ء

36 1/2 3

مرکز طبیب مرید کے عظیم الشان تقریب خجائی ملک بھر اور علماء کی شرکت

تقریباً ۲۵ سالہ کی عمر میں ۲۳ مارچ ۱۹۷۱ء کو لاہور کے علاقہ گلبرگ میں پیدا ہوئے۔ ان کے والدین ایک بااثر اور علمبردار خاندان کے تھے۔ ان کے والدین نے ان کی تعلیم اور پرورش کی۔ ان کے والدین نے ان کی تعلیم اور پرورش کی۔ ان کے والدین نے ان کی تعلیم اور پرورش کی۔

امریکہ، ہندوستان اور مساجد کے کنگھڑے سب سے زیادہ خوفزدہ ہیں اسے جہادی تحریکیں سسٹمی سے ملحق نظر آتی ہیں اس لئے ان پر دباؤ ڈالا جاتا ہے اور جہاد کے بارے میں غلط فہمیاں پھیلانے کی کوشش کی جاتی ہے۔

عشق منسوب کیونکر کرے؟ اگر یہ کہیں عبداللہ بن علی کا ہوا ہے تو اس کا تعلق عبداللہ بن علی سے ہے۔ اگر عبداللہ بن علی کا ہوا ہے تو اس کا تعلق عبداللہ بن علی سے ہے۔

[illegible][illegible]

آب و هوا و منابع طبیعی را در اختیار دارد. در این کشور، آب و هوا و منابع طبیعی را در اختیار دارد. در این کشور، آب و هوا و منابع طبیعی را در اختیار دارد.

جامعہ اسلامیہ اسلامیہ اسلامیہ اسلامیہ

قمار خان نے نہ صرف اسی طرح کی سرکاری سہولتیں حاصل کیں بلکہ ان کے علاوہ ان کے 300 سے زائد طلباء کو تعلیم مکمل کر کے فارغ ہو جانے پر ان کے لئے ایک اور سہولت بھی فراہم کی۔

57. علی: مبلغ عمومی نقشبند

حافظ ابراہیم سنی کیسے دعائیں اور
اسلامی احکام کی کتاب بیچ کر ان کے لئے
ان ممالک اور عرب کو ملے 57 طلبہ سید ابوبکر عابد
میں سے جو اس وقت تک زندہ ہیں ان میں سے ایک
ہو چکا ہے کہ وہ اب تک ان کے ساتھ حرمین شریفین
میں مقیم ہیں۔ ان کے ساتھ سال بھر کی خدمت کی

[illegible]

جیوا کی لاد مارا مثل آؤ بس کے مظاہر۔
 خلیل اللہ صاحب کی کتاب "بے حد غرور و غفلت" کا نام لیا۔
 جی۔ پی۔ پبلشرز لاہور ۱۹۷۶ء میں ۱۹۷۵ء میں ۲۶۰ ماں ۲۶۰ روپے
 کوئٹہ کے ایک گھر میں ایک لڑکے کی پیدائش ہوئی۔

عقل کیا ہے عقل ہی نہیں ہے کہ جو کہ اس کے ساتھ ہے۔

قوله: "فأمرهم في الدين" أي: أمرهم في الدين بما يشاء من الأحكام الشرعية.

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

[illegible]

لا بد جس کا مناسبہ انگریز کے حدود میں ہے جس کا مناسبہ انگریز کے حدود میں ہے

[illegible]

سید الشہداء علیؑ کے ساتھ جو کچھ ہوا وہ سب کچھ اس کے ساتھ ہوا۔

کیا کبھی دور رسالت یا دور صحابہ میں ہر سال دعوتِ توحید و تجدید عزم کنوں کا انعقاد کیا گیا؟

حضور ﷺ کی ولادت گاہ کا اندرونی دبیرونی منظر



حضور ﷺ کی ولادت گاہ کا بیرونی منظر ہے۔ سعودی قہری حکومت نے لائبریری میں تبدیل کر دیا اور اندر جاتے پر پابندی عائد کر دی۔ سعودی قہری حکومت کا پروگرام تھا کہ اس گورنمنٹ کے یہاں پر پابندی قائم کی جائے تاکہ عالم اسلام کے شہرہ احتجاج کے بعد سعودی قہری حکومت جیسے یہ پروگرام منسوخ کر دیا۔



حضور ﷺ کی ولادت گاہ کا اندرونی منظر جہاں پر گورنمنٹ نے آج سے اور صلوات سلام کے بعد گورنمنٹ کا پروگرام منسوخ کر دیا۔

کیا کبھی دور رسالت و صحابہ میں کاروان فروغ اسلام کا اہتمام کیا گیا؟

Monthly

Majallah

TAFHEEM-UL-ISLAM

Ahamad Pur East

Bahawal Pur (Punjab) Pakistan. Mob: 0333-6367567

کتاب وسنت کی بالادستی، اسلامی اقدار کے تحفظ، مغربی یلغار، نام نہاد
روشن خیالی اور فحاشی و عریانی کے انسداد اور تنظیمی رابطوں کی مضبوطی کیلئے

✱ مرکزی جمعیت اہلحدیث پاکستان ✱

کے زیر اہتمام

کاروان فروغ اسلام

زیر قیادت

مرکزی، صوبائی
ضلعی اور تحصیلی
قائمین بھی کاروان
کے ہمراہ ہونگے

قائمہ اہلحدیث
سابق
مفت مولانا
عبدلکیم
حافظ
بہار، پاکستان

عالمی
مفت مولانا
سابق
سید
بہار، پاکستان

استقبال

چوک منیر شہید
احمد پور شرقیہ
3 بجے سہ پہر

عید گاہ چوک
بہار پور
12 بجے دن

جلا پور موڑ
لودھراں
10 بجے شام

26 فروری 2007
بروز سوموار

مرکزی جمعیت اہلحدیث ضلع بہاول پور



اس خطاب کے بعد مسجد حرام (بیت اللہ) کے امام شیخ عبدالرحمن السدیس سے ہمارے چند سوالات

محترم قارئین! آپ نے الہدیث فریقے کے مرکزی جریدے ”مجلة الدعوة“ کی پوری رپورٹ ملاحظہ کی جس کے بعد ہم چند باتیں پوچھنا چاہتے ہیں۔

☆ مسجد حرام (بیت اللہ) کے امام شیخ عبدالرحمن السدیس نے الہدیث کو نبی ﷺ کی آل کیوں کہا؟

☆ امام صاحب نے دنیا بھر میں صرف الہدیث فریقے کے مراکز اور مساجد کے دورے کیوں کئے؟

☆ امام صاحب نے یہ کیوں کہا کہ ہر مسلمان کو الہدیث ہونا چاہئے؟

☆ امام صاحب نے دنیا بھر میں صرف جمعیت الہدیث کو امت کی وحدت کی نشانی کیوں قرار دیا؟

☆ امام صاحب نے صرف الہدیث والوں کے بارے میں یہ کیوں کہا کہ میں پاکستان آتا اور اپنے الہدیث بھائیوں سے ملے بغیر ہی چلا جاتا؟

☆ امام صاحب نے یورپ، پاکستان کے مسلمانوں کو سلام کہنے کے بجائے صرف الہدیثوں کو سلام کیوں پیش کیا؟

☆ امام صاحب نے صرف الہدیثوں کی تعظیم ”جماعۃ الدعوة“ کو ہی توحیدہ الوں کی جماعت کیوں کہا؟

☆ غیر اللہ کی تعظیم کو شرک کہنے والے امام صاحب، الہدیث مہدویوں کی تعظیم کے لئے کیوں کھڑے ہوئے؟

☆ دوران گفتگو امام صاحب نے غیر مقلد مہدوی حافظ سعید کیلئے کہا کہ آپ تو ہمارے دل میں بستے ہیں۔ یہ کلمات کبھی کسی سنی عالم کے بارے میں امام صاحب نے کیوں نہیں کہے؟

☆ میلا: مصطفیٰ ﷺ کے موقع پر ”اہلہ وسہلا مرحبا“ کے نعروں کو بدعت کہنے والے غیر مقلدین الہدیث مہدویوں نے امام صاحب کی آغوش پر ”اہلہ وسہلا مرحبا“ کے نعرے کیوں لگائے؟

☆ فرقہ واریت کی مخالفت کرنے والے امام صاحب نے لوگوں کو الہدیث فریقے میں شمولیت کی دعوت کیوں دی؟

☆ امام صاحب کی اس تقریر کو ہم کیا سمجھیں؟ اسلام کی دعوت یا الہدیث فریقے کی تبلیغ؟

☆ امام صاحب! آپ لی تقریر ملاحظہ کر لیں ہمیں ایسا محسوس ہوا کہ آپ بھی غیر مقلد الہدیث ہیں۔ ورنہ اہلسنت کا ذکر ضرور کرتے.....!!!

16

1424 29 — 2003 24

مختار ویرما کے اندرونی حالات

□ تمام ذخیرہ کی اصل جز ہے

ماہنامہ آب کی بید!

www.tandem.co

تجدید و ترقی

موت العالم، موت العالم

تھیں۔ انھیں ملے، جیسے خانہ پاکستان اور ولایتی ملائکہ، جن کے سربراہان مسلمانوں اور مسلمانوں کے شاہ فروری میں مسلمانوں کے

سولہ سالہ عرصہ میں 17 دفعہ ان کے بارے میں 1346ء بمطابق 1920ء کو برصغیر میں ایک اور سفر اکتشافی کے لیے ان کے ساتھ جہاز پر روانہ کیا گیا۔ ان کے بارے میں ایک کتاب بھی لکھی گئی ہے۔ ان کے لیے ایک ٹولہ کی شکل میں دراصل سلاسل آپس میں سے آپس کے لیے مرتب کیا گیا۔ ان کے بارے میں ایک کتاب بھی لکھی گئی ہے۔ ان کے لیے ایک ٹولہ کی شکل میں دراصل سلاسل آپس میں سے آپس کے لیے مرتب کیا گیا۔ ان کے بارے میں ایک کتاب بھی لکھی گئی ہے۔ ان کے لیے ایک ٹولہ کی شکل میں دراصل سلاسل آپس میں سے آپس کے لیے مرتب کیا گیا۔

[illegible][illegible][illegible]

دیوبندیوں کے ہفت روزہ ”ندائے ملت“ نے علمائے اہلسنت کی خدمات کو تسلیم کر لیا

دیوبندیوں کی مرکزی جماعت تنظیم اسلامی کے مرکزی جریدے ہفت روزہ ”ندائے ملت“ جو کہ لاہور سے شائع ہوتا ہے، جس کا ایڈیٹر حافظ عاکف سعید جو کہ ڈاکٹر اسرار احمد کا لڑکا ہے، جریدے نے 24 دسمبر 2003ء کے شمارے میں قائد ملت اسلامیہ علامہ مولانا شاہ احمد نورانی صدیقی علیہ الرحمہ کے وصال کے موقع پر ادارہ ان سے منسوب کرتے ہوئے لکھا:

”قائد ملت اسلامیہ حضرت علامہ مولانا شاہ احمد نورانی صدیقی علیہ الرحمہ نے تحریک پاکستان میں بھرپور حصہ لیا اور 1946ء میں نیشنل گارڈز تنظیم کی بنیاد ڈالی۔“

”قائد ملت اسلامیہ علامہ شاہ احمد نورانی صدیقی علیہ الرحمہ کے والد ماجد مبلغ اسلام حضرت علامہ مولانا شاہ عبدالعلیم صدیقی علیہ الرحمہ کو قائد اعظم محمد علی جناح نے سفیر پاکستان کا خطاب دیا۔“

”قائد ملت اسلامیہ علامہ شاہ احمد نورانی صدیقی علیہ الرحمہ کے تایا حضرت علامہ مولانا نذیر احمد صدیقی علیہ الرحمہ بھی عالم دین تھے اور بمبئی (ہندوستان) کی جامع مسجد کے خطیب تھے۔ قائد اعظم محمد علی جناح کے ان سے ذاتی تعلقات تھے اور ان سے مذہبی معاملات میں رہنمائی حاصل کرتے تھے اور انہی کے پیچھے قائد اعظم محمد علی جناح عیدین کی نماز ادا کرتے تھے۔ قائد اعظم محمد علی جناح نے اپنی بیوی رتن بائی کو بھی انہی کے ہاتھ پر اسلام قبول کروایا۔ قیام پاکستان کے بعد قائد اعظم محمد علی جناح نے پہلی نماز عید عید گاہ مسجد (جامع کلاچھ) میں علامہ شاہ احمد نورانی صدیقی علیہ الرحمہ کے والد مبلغ اسلام سفیر پاکستان حضرت علامہ مولانا شاہ عبدالعلیم صدیقی علیہ الرحمہ کی امامت میں ادا کی۔“

غیر مقلد احمدیہ فرقے سے ہمارے سوالات

محترم حضرات آپ نے غیر مقلد احمدیہ فرقے کے سرکردہ رہنما اور لیڈر پر دہشہر حافظ محمد سعید کا خطبہ جمعۃ المبارک کا تحریری مطالعہ کیا۔ انہوں نے واضح الفاظ میں کہا ہے کہ:

”جو کام اللہ کے نبی ﷺ اپنی زندگی میں کر سکتے تھے اور آپ ﷺ نے نہیں کیا اور بعد میں صحابہ کرام علیہم الرضوان اور خیر القرون نے بھی وہ کام نہیں کیا تو وہ کام چاہے کتنا ہی اچھا ہو اور ہم اس کو چھٹا سمجھ کر رہے ہوں، وہ ”بدعت“ ہے۔

اس بیان کے بعد ہمارا سوال غیر مقلد احمدیہ فرقے کے علماء اور عوام سے یہ ہے کہ آپ لوگ بھی تو وہ کام کرتے ہیں جو کبھی صحابہ کرام اور تابعین نے نہیں کئے؟

☆ کیا کبھی صحابہ کرام علیہم الرضوان اور خیر القرون نے تمین و ن مقرر کر کے اجتماع کیا؟

☆ کیا کبھی صحابہ کرام علیہم الرضوان اور خیر القرون نے توہین رسالت کے خلاف جھنڈوں سمیت جلوس نکالا؟

☆ کیا کبھی صحابہ کرام علیہم الرضوان اور خیر القرون نے اپنے نام کے ساتھ سلفی، محمدی اور احمدیہ لکھا؟

☆ کیا کبھی صحابہ کرام علیہم الرضوان اور خیر القرون نے احمدیہ کا نفوس کا انعقاد کیا؟

☆ کیا کبھی صحابہ کرام علیہم الرضوان اور خیر القرون نے عظیم الشان تقریب ختم بخاری کا انعقاد کیا؟

☆ کیا کبھی صحابہ کرام علیہم الرضوان اور خیر القرون نے کسان کا نفوس کا انعقاد کیا؟

☆ کیا کبھی صحابہ کرام علیہم الرضوان اور خیر القرون نے جہاد فی سبیل اللہ کا نفوس کا انعقاد کیا؟

☆ کیا کبھی صحابہ کرام علیہم الرضوان اور خیر القرون نے مسجد رسول کا نفوس کا انعقاد کیا؟

☆ کیا کبھی صحابہ کرام علیہم الرضوان اور خیر القرون نے حرم رسول کے جلوس نکالے؟

☆ کیا کبھی صحابہ کرام علیہم الرضوان اور خیر القرون نے شہداء کا نفوس کا انعقاد کیا؟

☆ کیا کبھی صحابہ کرام علیہم الرضوان اور خیر القرون نے تحفظ بیت المقدس کا نفوس کا انعقاد کیا؟

☆ کیا کبھی صحابہ کرام علیہم الرضوان اور خیر القرون نے تحفظ قبلہ اول کے نام پر جلوس نکالے؟

☆ کیا کبھی صحابہ کرام علیہم الرضوان اور خیر القرون نے سالانہ دعوت توحید و تجدید منعقد کرنے کا نفوس کا انعقاد کیا؟

☆ کیا کبھی صحابہ کرام علیہم الرضوان اور خیر القرون نے فوج کا نفوس کا انعقاد کیا؟

☆ کیا کبھی صحابہ کرام علیہم الرضوان اور خیر القرون نے مجاہد کسان کا نفوس کا انعقاد کیا؟

☆ کیا کبھی صحابہ کرام علیہم الرضوان اور خیر القرون نے علماء و سنیین کا انعقاد کیا؟

☆ کیا کبھی صحابہ کرام علیہم الرضوان اور خیر القرون نے سیرت النبی ﷺ کا نفوس کا انعقاد کیا؟

☆ کیا کبھی صحابہ کرام علیہم الرضوان اور خیر القرون نے دار ثانیہ انبیاء کا نفوس کا انعقاد کیا؟

☆ کیا کبھی صحابہ کرام علیہم الرضوان اور خیر القرون نے تفسیر دعوت القرآن کی تعارفی تقریب منعقد کی؟

☆ کیا کبھی صحابہ کرام علیہم الرضوان اور خیر القرون نے ہر سال قرآن وحدیث کا نفوس کا دن مقرر کر کے انعقاد کیا؟

☆ کیا کبھی صحابہ کرام علیہم الرضوان اور خیر القرون نے ہر سال شان رسالت کا نفوس کا انعقاد کیا؟

☆ کیا کبھی صحابہ کرام علیہم الرضوان اور خیر القرون نے احترام رمضان کا نفوس کا انعقاد کیا؟

☆ کیا کبھی صحابہ کرام علیہم الرضوان اور خیر القرون نے تربیت حج کا نفوس کا انعقاد کیا؟

☆ کیا کبھی صحابہ کرام علیہم الرضوان اور خیر القرون نے اپنے مرحومین کی طرف سے قربانی کا اشتہار دیا؟

☆ کیا کبھی صحابہ کرام علیہم الرضوان اور خیر القرون نے مساجد کے افتتاح پر وقت مقرر کر کے تقریب منعقد کی اور پھر...

☆ کیا کبھی صحابہ کرام علیہم الرضوان اور خیر القرون نے خواتین کا تبلیغی و اصلاحی اجتماع منعقد کیا؟

☆ کیا کبھی صحابہ کرام علیہم الرضوان اور خیر القرون نے نئے اسلامی سال کے موقع پر ہر سال مبارکباد پیش کی؟

☆ کیا کبھی صحابہ کرام علیہم الرضوان اور خیر القرون نے علماء کا نفوس کا انعقاد کیا؟

☆ کیا کبھی صحابہ کرام علیہم الرضوان اور خیر القرون نے اپنے جامعہ میں محرم الحرام کے خطبات کئے؟

☆ کیا کبھی صحابہ کرام علیہم الرضوان نے اپنے نام کے ساتھ حافظ، مفتی، مجددی اور الامام کا خطاب کیا؟

اس کے علاوہ بھی کئی ایسے کام ہیں جو کبھی صحابہ کرام علیہم الرضوان اور خیر القرون نے نہیں کئے مگر پوری الامم و قوم نے...

بطریقہ سے سرانجام دیتی ہے اور کروڑوں، اربوں روپے اس پر خرچ کرتی ہے۔ اب ان کے مرکزی رہنماؤں کے قبوے...

بدعت نہیں ہوئے؟۔۔۔ جواب دو۔۔۔!!!

اور اپنے کارناموں کو صحابہ کرام علیہم الرضوان اور خیر القرون کے عمل سے ثابت کر دو۔۔۔!!!

مولانا محمد شہزاد قادری تروابی

کی عقائد، اصلاح، سائنس، فقہ و سیاست اور سیرت پر تصانیف

اس کتاب کا نام گھر بیٹھے 50% ڈسکاؤنٹ میں مکتبہ بیضاں اشرف لاہور سے منسلک کاروبار کر رہی ہے۔ بچہ چڑھی آؤ بیچ کر دے سکتے ہیں۔

نیز ڈاک خرچ ادارے کے ذمہ ہوگا۔ شکریہ